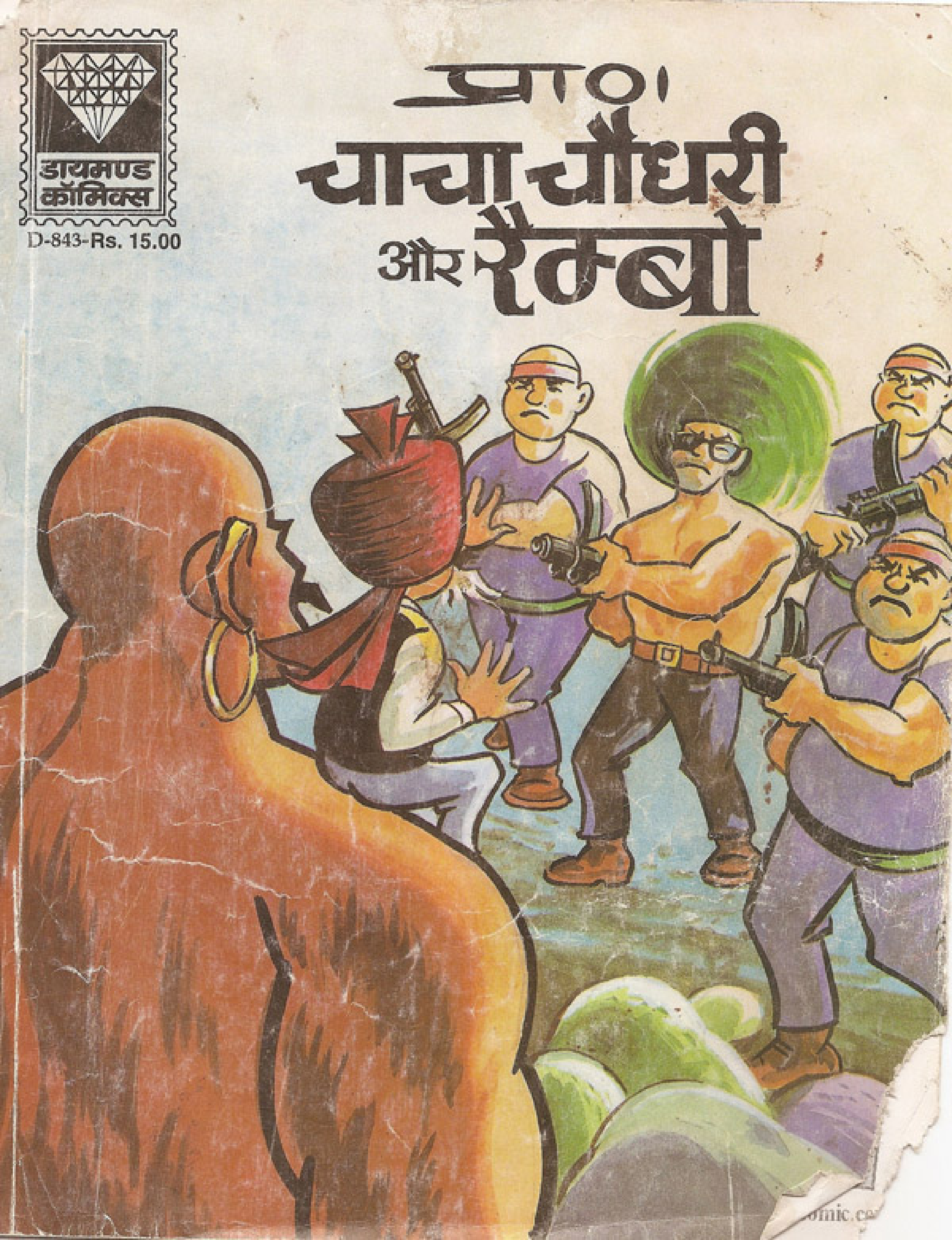
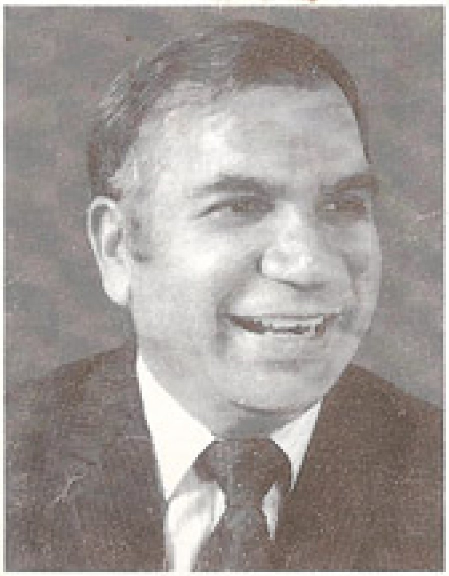



डायमण्ड कॉमिक्स
D-843-Rs. 15.00
प्राण
चाचा चौधरी
और रैम्बो



कार्टूनिस्ट प्राण

यह कॉमिक कार्टूनिस्ट प्राण की विभिन्न रचनाओं में से एक है. प्राण का जन्म कसूर नामक छोटे से कसबे में हुआ था, जो अब पाकिस्तान में है. विभाजन के बाद उनका परिवार ग्वालियर आकर बस गया. एम.ए. (राजनीति) और बम्बई में फाइन आर्ट्स का अध्ययन करने के बाद उनका कार्टूनिंग कैरियर 1960 में दैनिक मिलाप, नई दिल्ली से शुरू हुआ.

उन दिनों विदेशी कॉमिक स्ट्रिप्स का पूरे भारत में एकाधिकार था. प्राण ने इस एकाधिपत्य को समाप्त करने के विचार से भारतीय पात्रों को लेकर स्थानीय विषयों और समस्याओं पर कॉमिक्स बनानी शुरू की. उन्होंने एक आम मध्यम वर्ग की भारतीय गृहिणी को लेकर 'श्रीमतीजी' कॉमिक्स बनाई, जो अब 'मनोरमा' (इलाहाबाद) में प्रकाशित हो रही है. उनके दूसरे चरित्र 'चाचा चौधरी', 'रमन', 'बिल्लू' और 'पिंकी' सारे भारत में लोकप्रिय हो चुके हैं.

भारत में सबसे ज्यादा कॉमिक्स बनाने के लिये उनका नाम लिम्का बुक आफ रिकार्ड्स में दर्ज है तथा उनकी चाचा चौधरी स्ट्रिप्स को अंतर्राष्ट्रीय म्युजियम आफ कार्टून आर्ट, अमरीका में प्रदर्शित किया गया है.

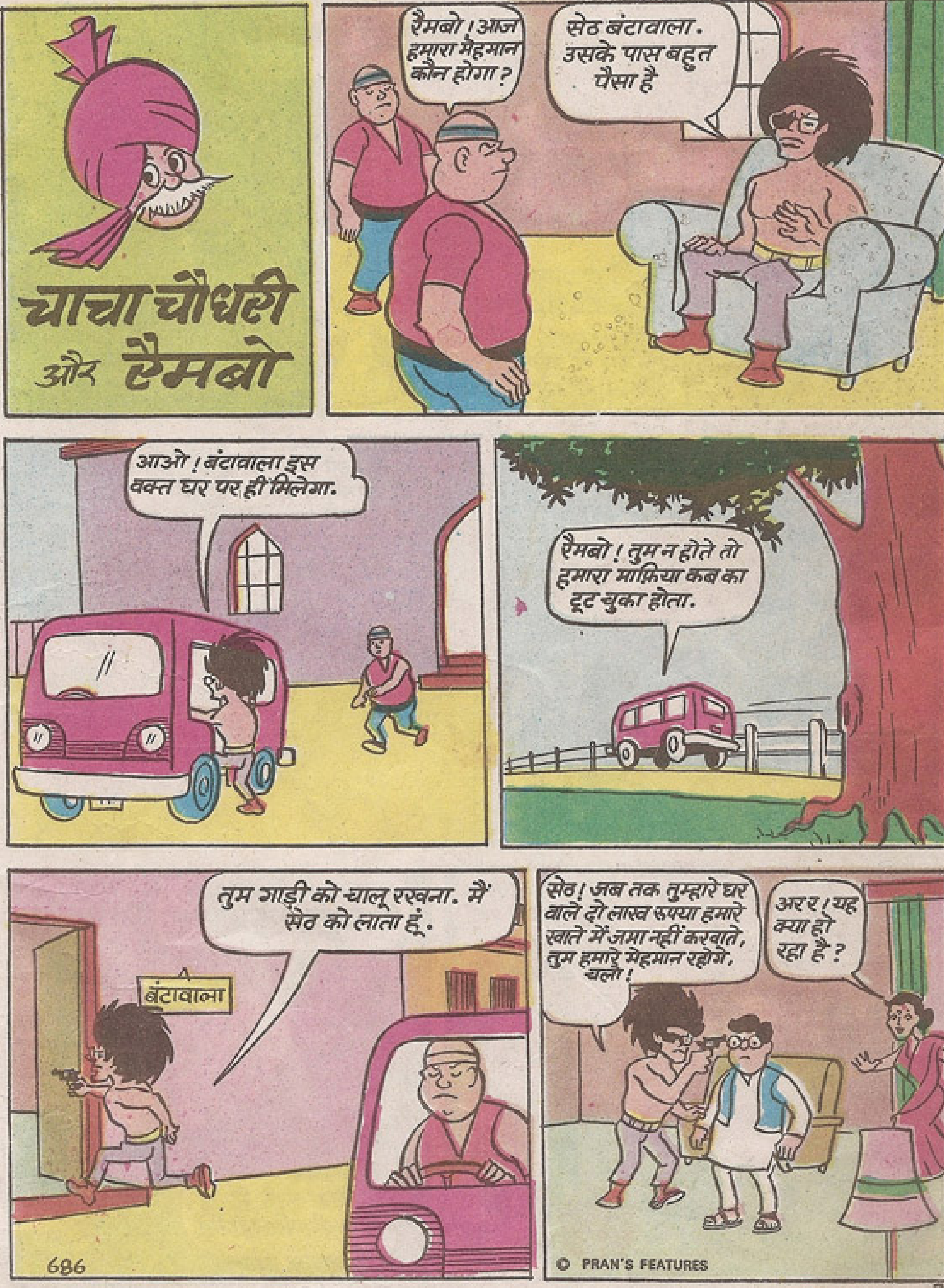
डायमण्ड कॉमिक्स ने उनकी स्ट्रिप्स को पुस्तकबद्ध करके एक नया आयाम दिया.

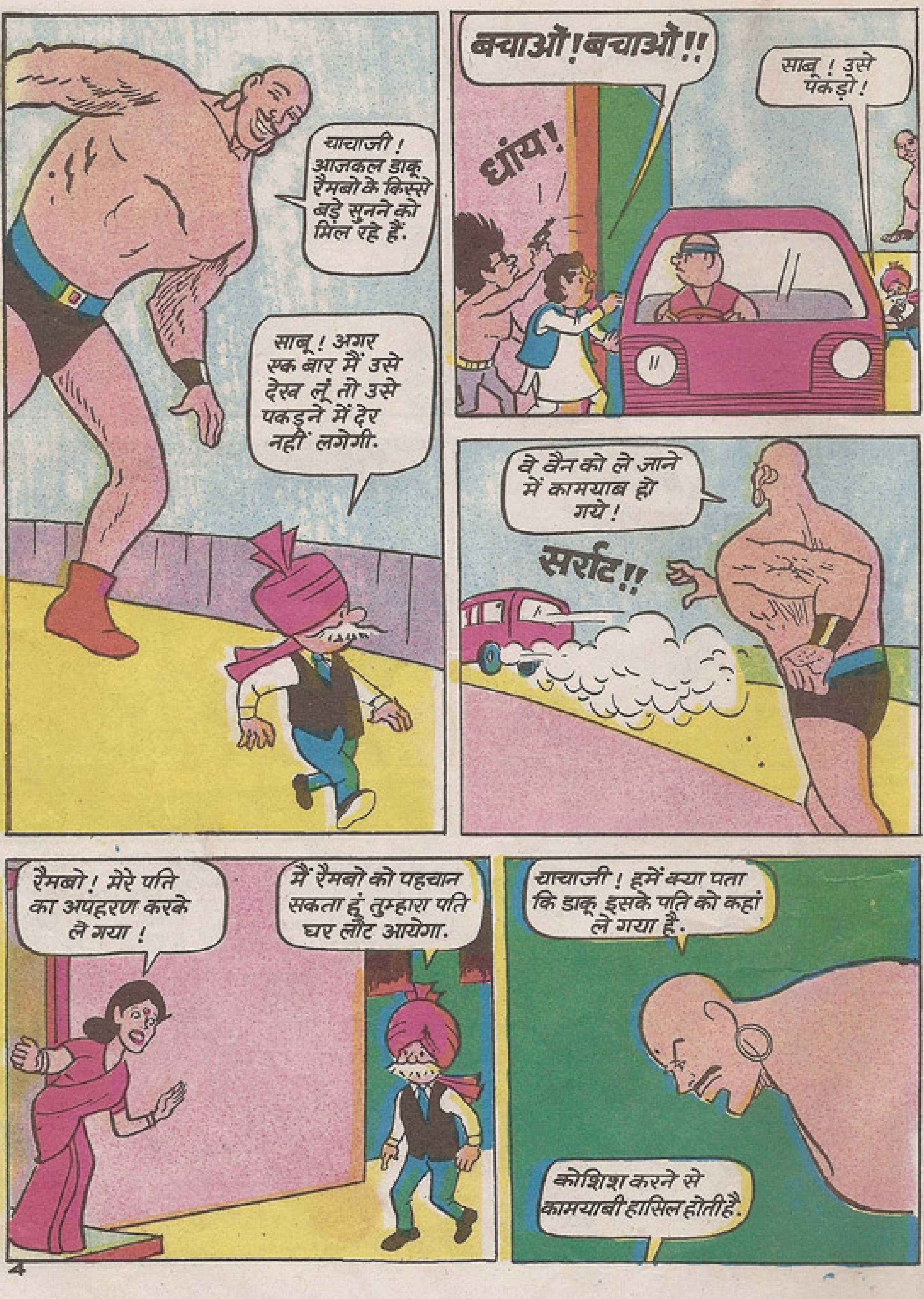
1983 में स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने प्राण की राष्ट्रीय एकता पर बनाई गई कॉमिक्स 'रमन--हम एक हैं' का बिक्री के लिए विमोचन किया. 1982 वर्ष का ठिठोली पुरस्कार इनको देकर सम्मानित किया गया.

प्राण के चरित्रों की अत्यन्त लोकप्रियता का रहस्य है कि वे सीधे सरल हास्य द्वारा पाठकों को भीतर तक गुदगुदा देते हैं. उनके शब्दों में--''अगर मैं टैक्स और मंहगाई के बोझ से दबे भारतीयों को कुछ हंसा सकूं तो अपने मकसद को सफल समझूंगा''.

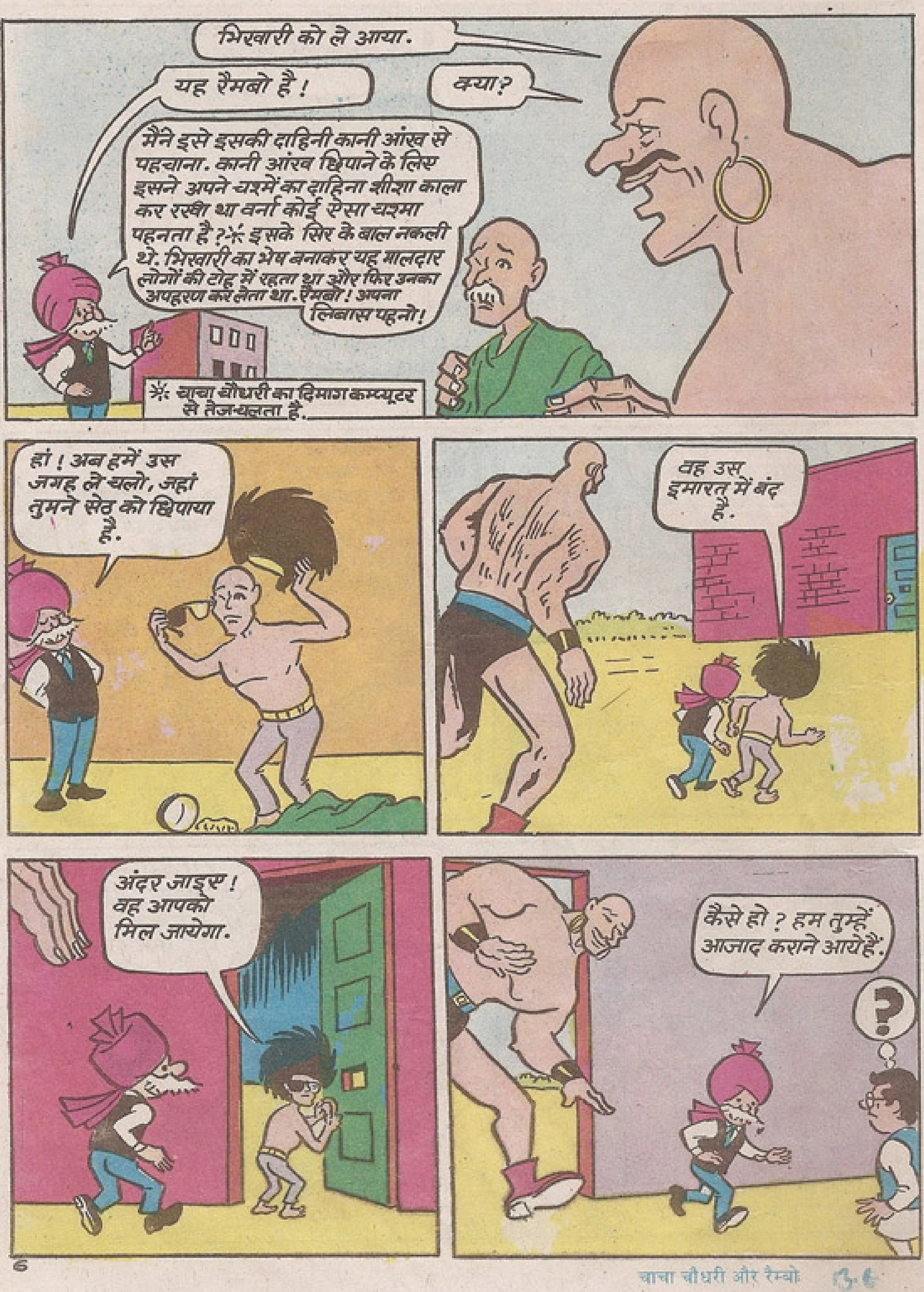
-- प्रकाशक

Printed and Published by Gulshan Rai on behalf of Diamond Comics, 257, Dariba Kalan, Delhi-6 & Printed at Jain Offset Printers, 2864, Chail Puri, Kinari Bazar, Delhi-110006 Editor : Gulshan Rai RNI No. :39423/81

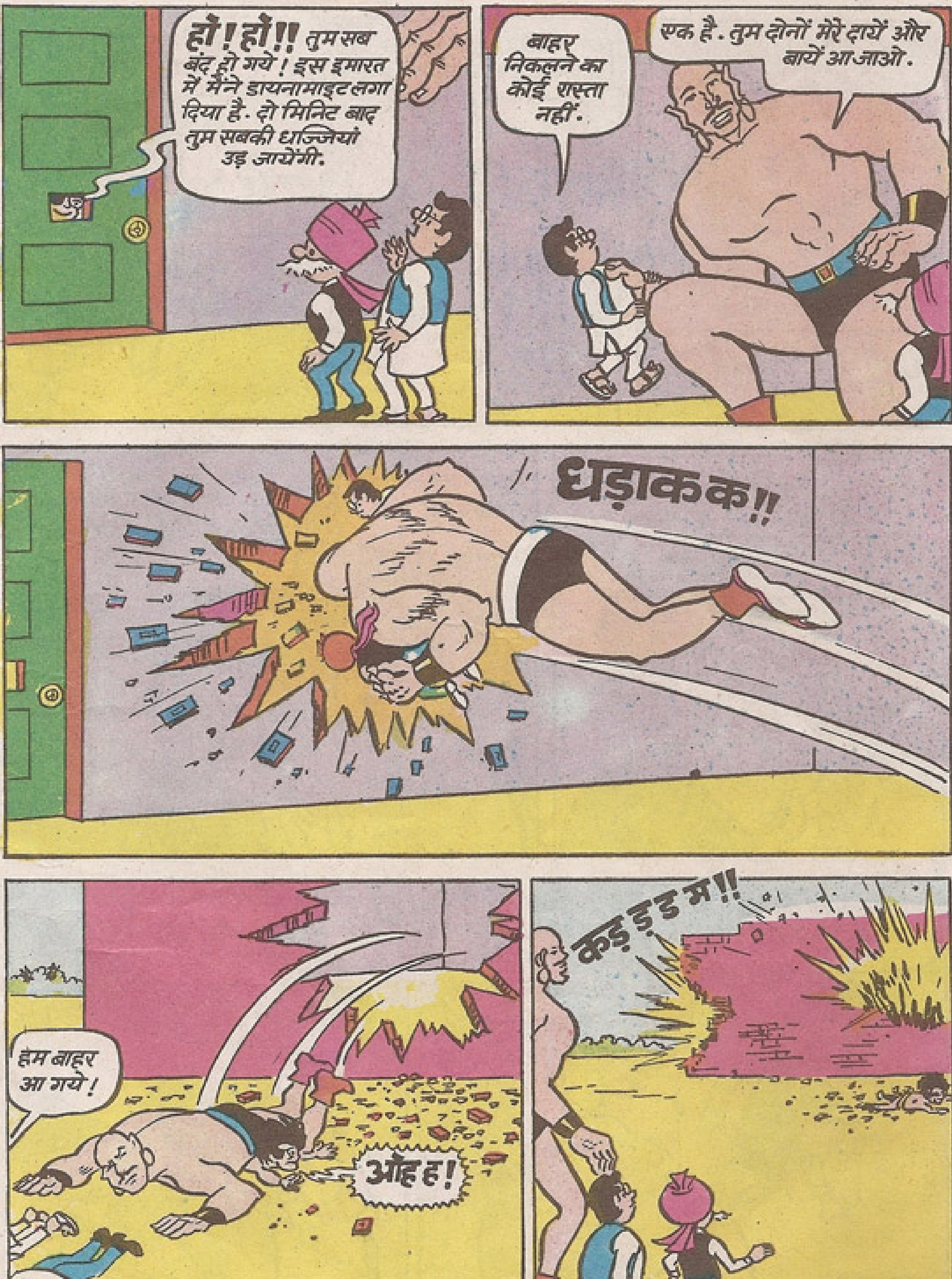

चाचा चौधरी
और रैमबो
रैमबो! आज हमारा मेहमान कौन होगा?
सेठ बंटावाला. उसके पास बहुत पैसा है
आओ! बंटावाला इस वक्त घर पर ही मिलेगा.
रैमबो! तुम न होते तो हमारा माफ़िया कब का टूट चुका होता.
तुम गाड़ी को चालू रखना. मैं सेठ को लाता हूं.
बंटावाला
686
सेठ! जब तक तुम्हारे घर वाले दो लाख रुपया हमारे खाते में जमा नहीं करवाते, तुम हमारे मेहमान रहोगे, चलो!
अरर! यह क्या हो रहा है?
© PRAN'S FEATURES


चाचाजी ! आजकल डाकू रैमबो के किस्से बड़े सुनने को मिल रहे हैं.
साबू ! अगर एक बार मैं उसे देख लूं तो उसे पकड़ने में देर नहीं लगेगी.
बचाओ ! बचाओ !!
धांय !
साबू ! उसे पकड़ो !
वे वैन को ले जाने में कामयाब हो गये !
सर्राट !!
रैमबो ! मेरे पति का अपहरण करके ले गया !
मैं रैमबो को पहचान सकता हूं, तुम्हारा पति घर लौट आयेगा.
चाचाजी ! हमें क्या पता कि डाकू इसके पति को कहां ले गया है.
कोशिश करने से कामयाबी हासिल होती है.

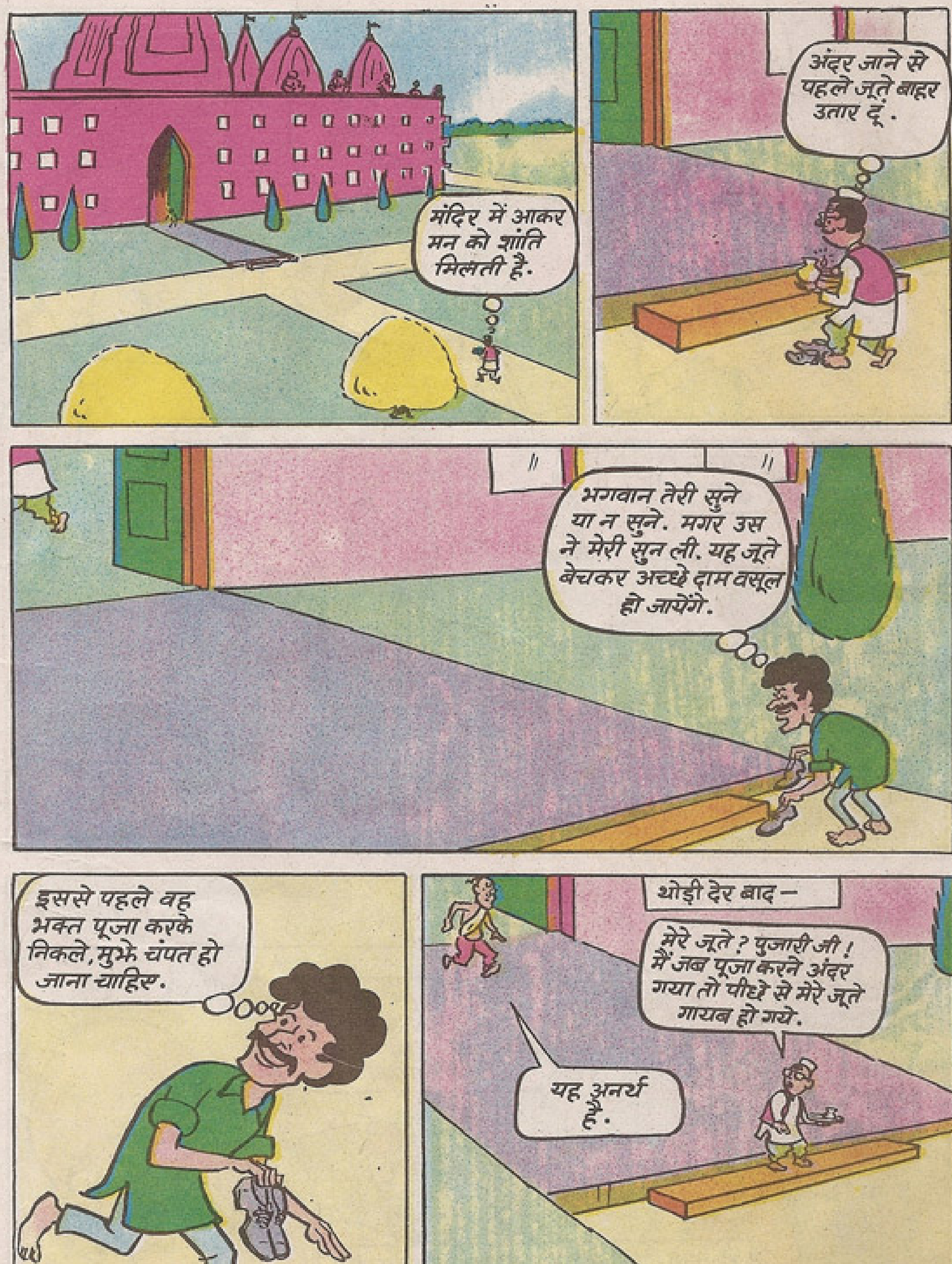

जाओ! जब तक तुम्हारे घर वाले पैसा नहीं भेजते, तुम कैद रहोगे.
कई घंटों से हम शहर की खाक छान रहे हैं पता नहीं वह सेठ कहां है?
हम उसे ढूंढकर ही दम लेंगे.
बाबा! गरीब को पैसा मिल जाये. तुम्हारा काम बनेगा.
अगर हम फकीर को पैसा दें तो उनकी दुआ से शायद सफलता मिले?
उसे उठा लाओ!
हैं? आप क्या कह रहे हैं?
जैसा कहता हूं, करो!
अर र!! क्या कर रहे हो?
जैसा चाचाजी ने कहा, वैसा कर रहा हूं. वे कभी गलत नहीं कहते.

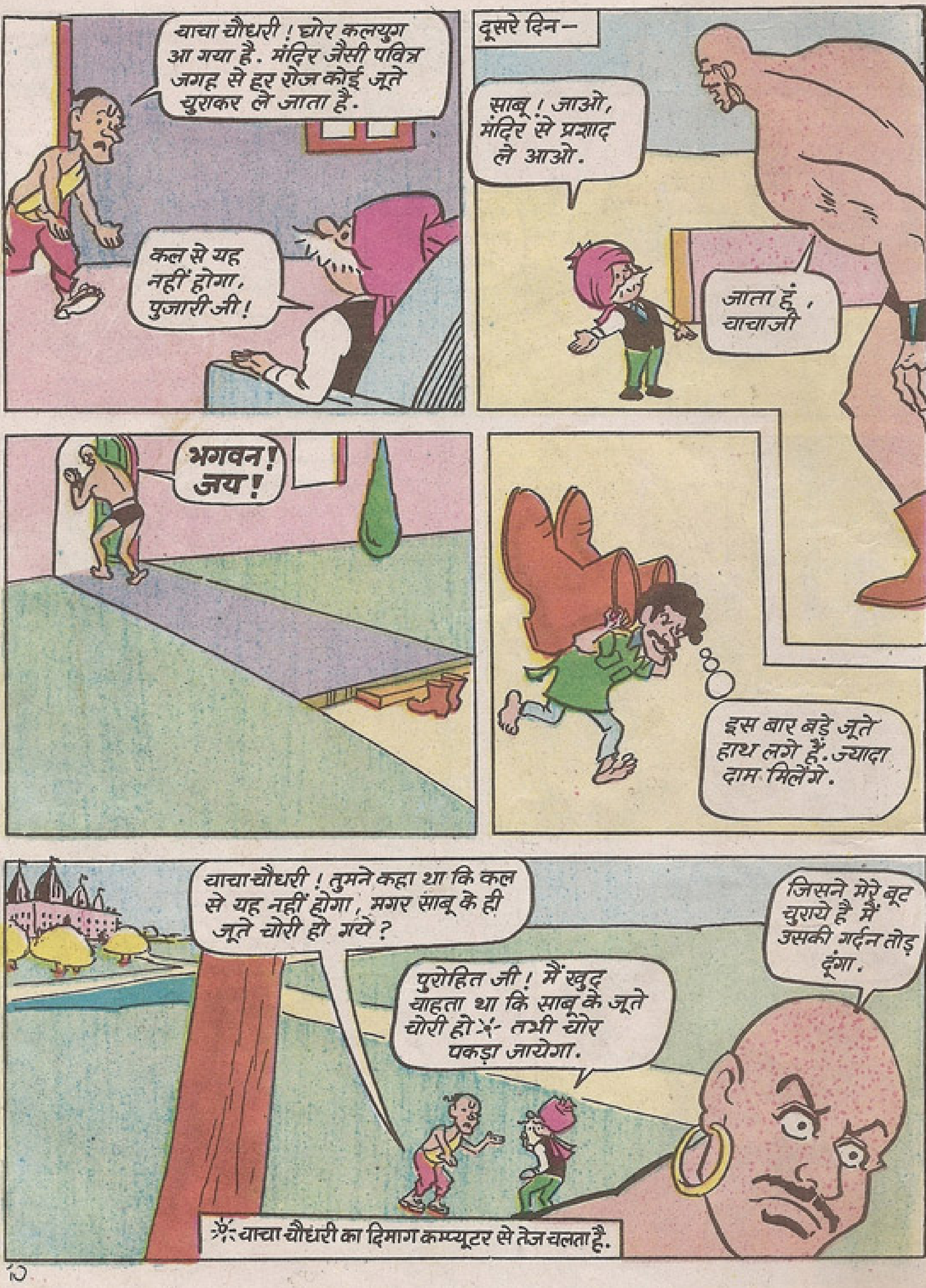


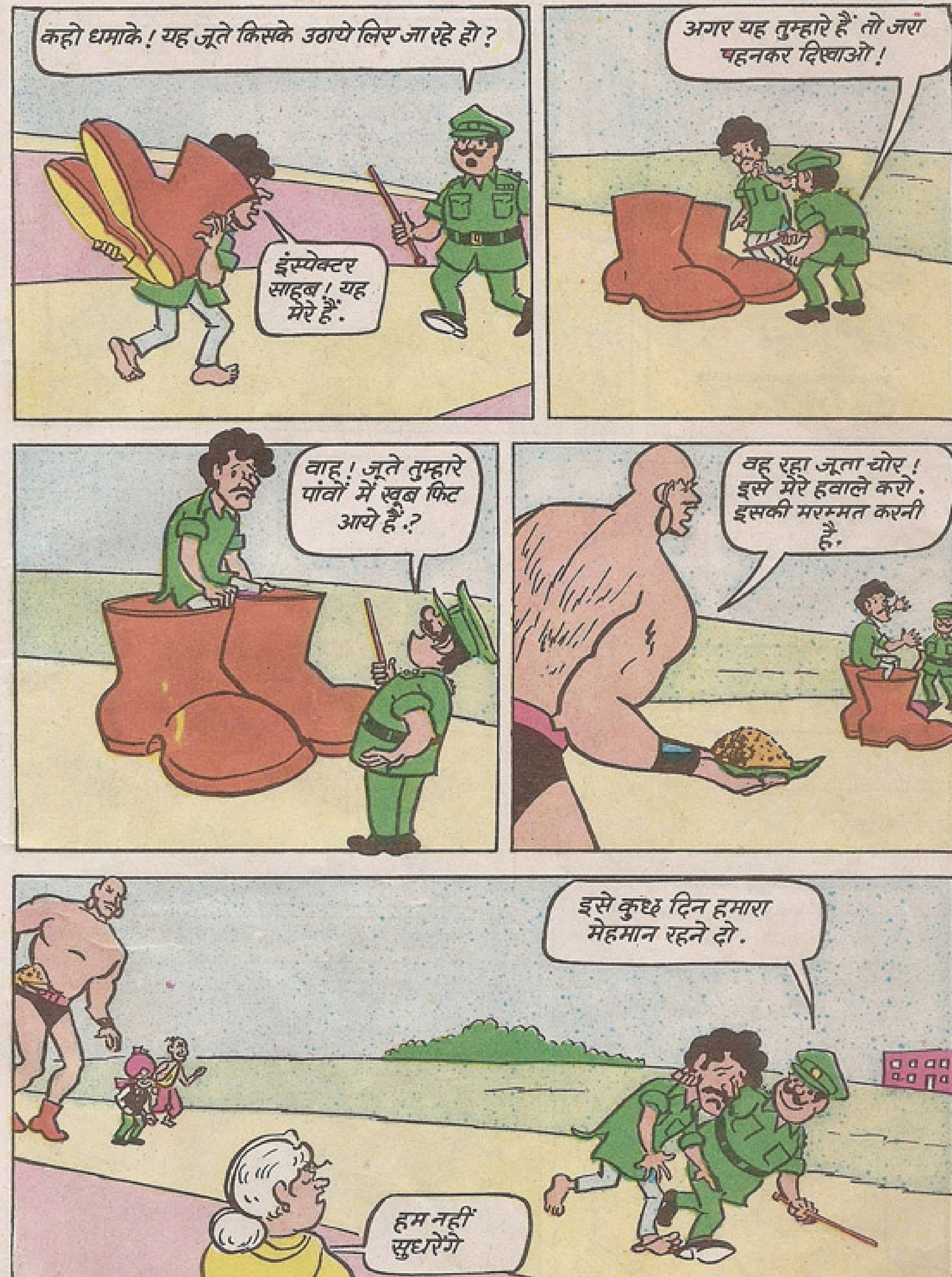
भिखारी को ले आया.
यह रैमबो है !
क्या?
मैंने इसे इसकी दाहिनी कानी आंख से पहचाना. कानी आंख छिपाने के लिए इसने अपने चश्में का दाहिना शीशा काला कर रखा था वर्ना कोई ऐसा चश्मा पहनता है ?✳ इसके सिर के बाल नकली थे. भिखारी का भेष बनाकर यह मालदार लोगों की टोह में रहता था और फिर उनका अपहरण कर लेता था. रैमबो ! अपना लिबास पहनो !
✳ चाचा चौधरी का दिमाग कम्प्यूटर से तेज चलता है.
हां ! अब हमें उस जगह ले चलो, जहां तुमने सेठ को छिपाया है.
वह उस इमारत में बंद है.
अंदर जाइए ! वह आपको मिल जायेगा.
कैसे हो ? हम तुम्हें आजाद कराने आये हैं.
?

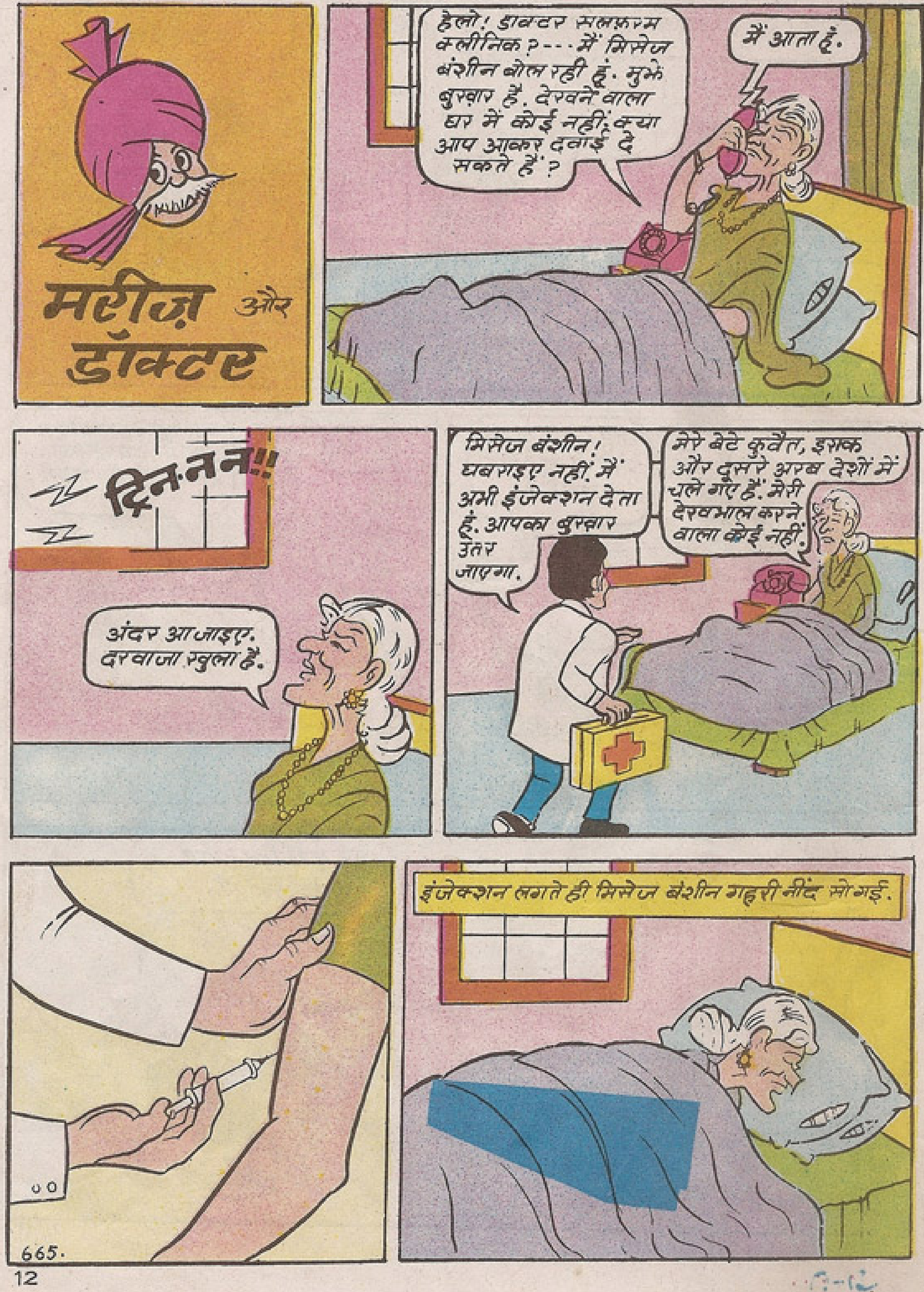

हो! हो!! तुम सब बंद हो गये! इस इमारत में मैंने डायनामाइट लगा दिया है. दो मिनिट बाद तुम सबकी धज्जियां उड़ जायेंगी.
बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं.
एक है. तुम दोनों मेरे दायें और बायें आ जाओ.
धड़ाकक!!
हम बाहर आ गये!
ओहह!
कड़ड़ड़म!!

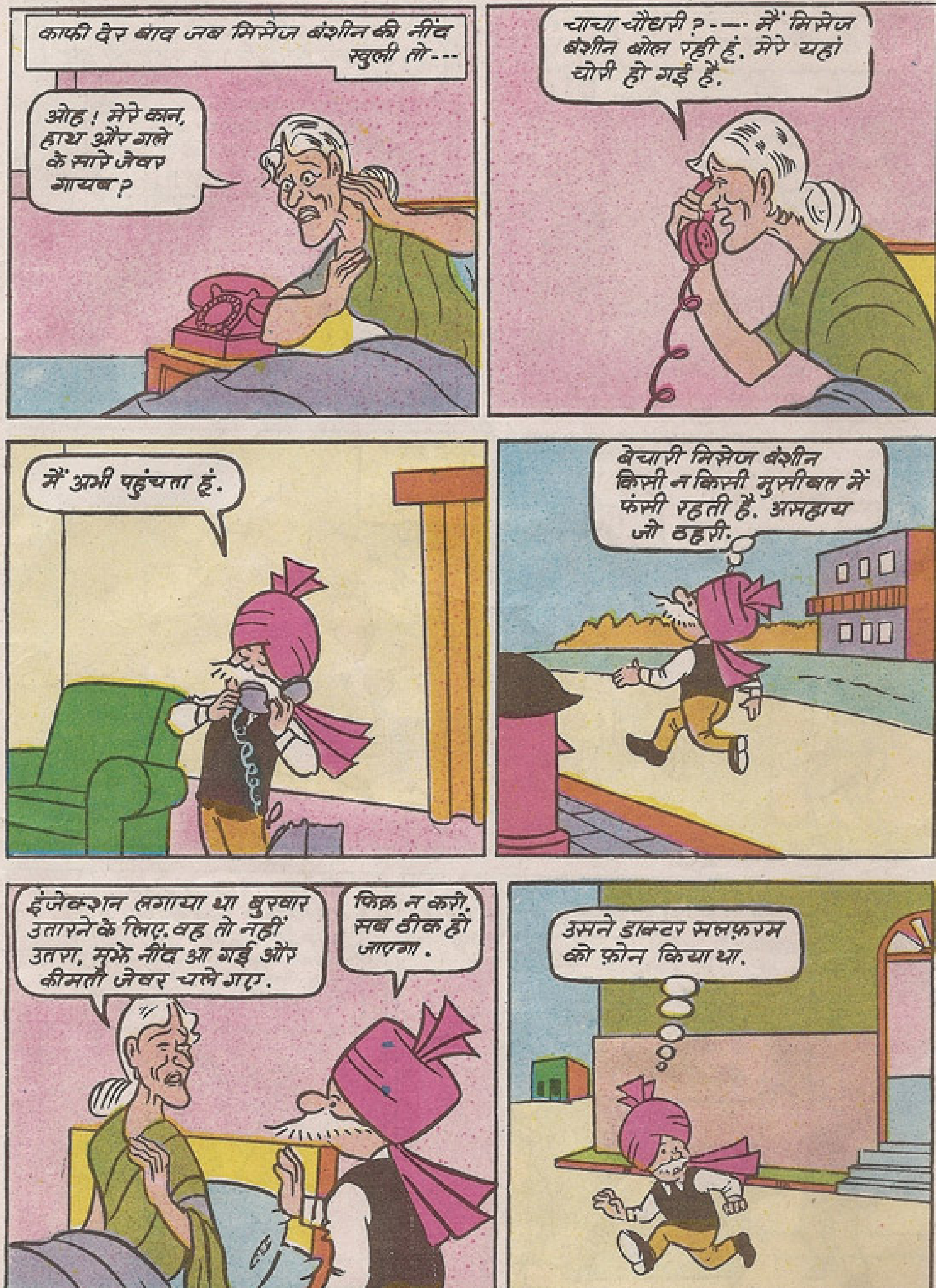

जूता चोर
धमाकासिंह ! तुम जेल से कब छूटकर आये ?
कुछ दिन पहले, तायी !
अब बुरे कामों से तौबा कर लो.
तायी ! अब मैं सुधर गया हूं.
खाने का क्या प्रबंध है ?
सब ऊपर वाला देता है. रोज मंदिर जाता हूं. बस, वहीं से जो मिल जाता है, उससे गुजारा होता है.
अच्छा, पूजा का टाइम हो गया है. चलता हूं.
इस उच्चक्के की कायापलट हो गयी है. इसे कहते हैं भगवान का चमत्कार.
वह पूजा के लिए जा रहा है मुझे भी उसके पीछे हो लेना चाहिए.
687 / 1989.
© PRAN'S FEATURES

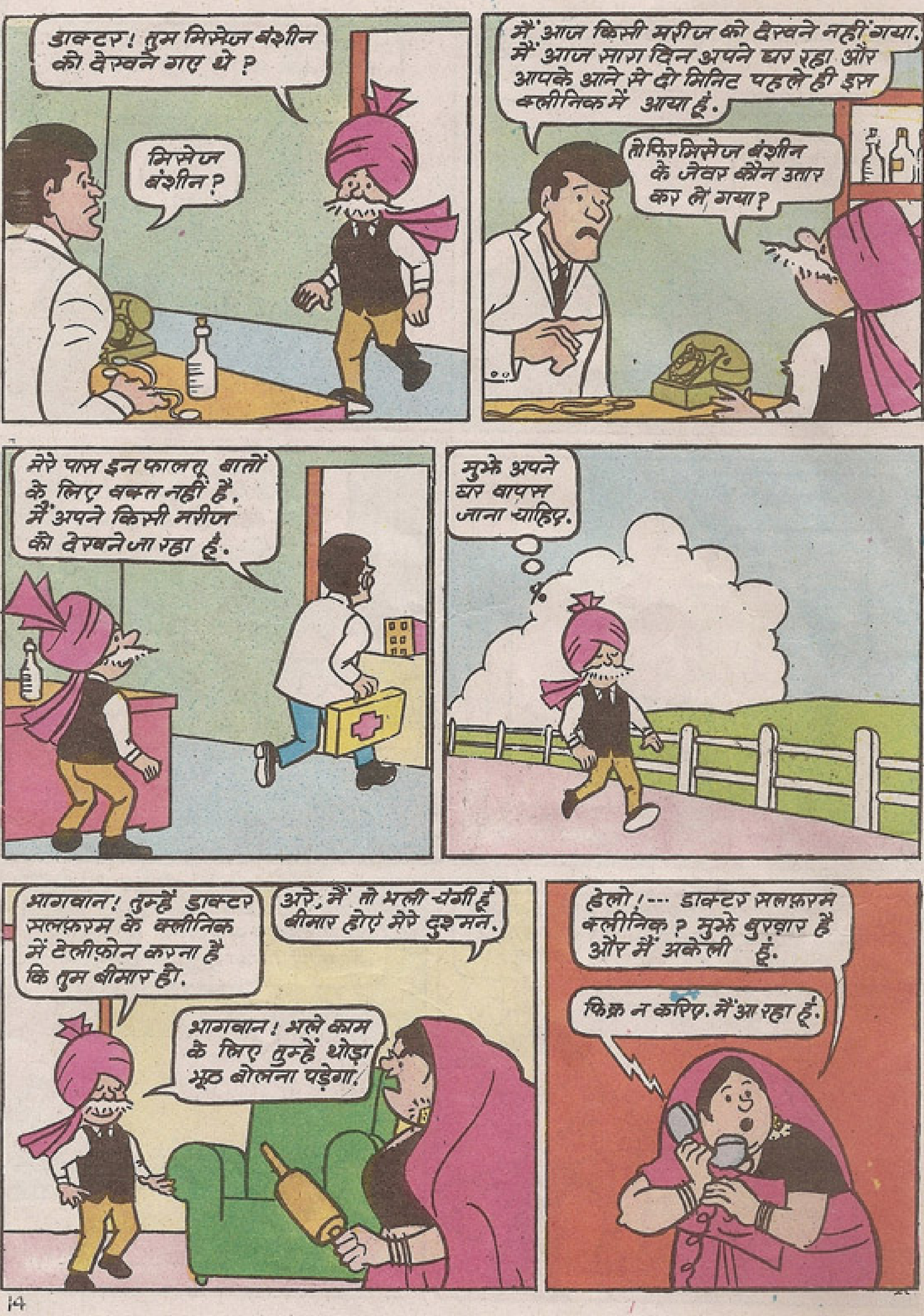

मंदिर में आकर मन को शांति मिलती है.
अंदर जाने से पहले जूते बाहर उतार दूं.
भगवान तेरी सुने या न सुने. मगर उस ने मेरी सुन ली. यह जूते बेचकर अच्छे दाम वसूल हो जायेंगे.
इससे पहले वह भक्त पूजा करके निकले, मुझे चंपत हो जाना चाहिए.
थोड़ी देर बाद —
मेरे जूते ? पुजारी जी ! मैं जब पूजा करने अंदर गया तो पीछे से मेरे जूते गायब हो गये.
यह अनर्थ है.

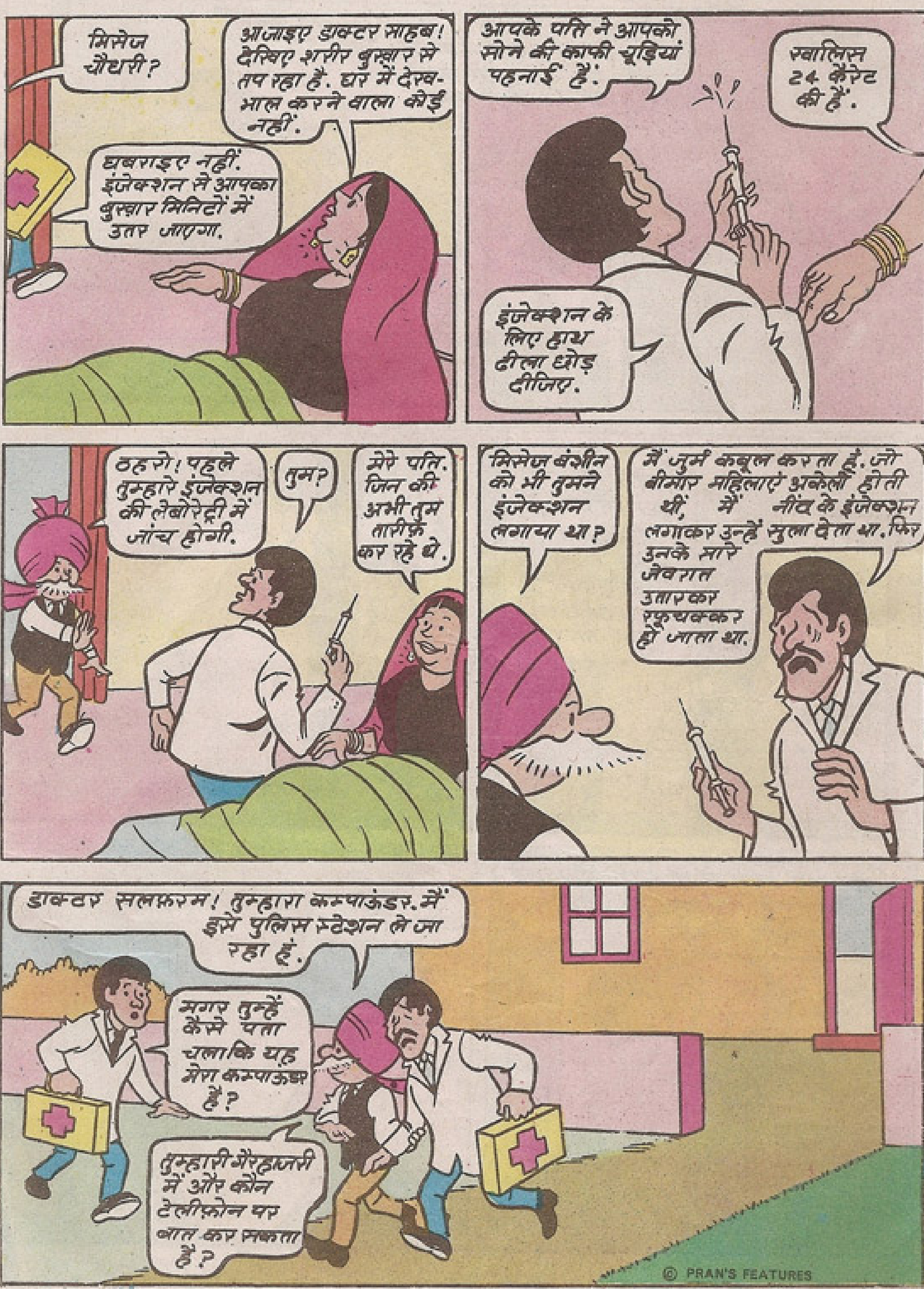

चाचा चौधरी ! घोर कलयुग आ गया है. मंदिर जैसी पवित्र जगह से हर रोज कोई जूते चुराकर ले जाता है.
कल से यह नहीं होगा, पुजारी जी !
दूसरे दिन–
साबू ! जाओ, मंदिर से प्रसाद ले आओ.
जाता हूं, चाचाजी
भगवन! जय!
इस बार बड़े जूते हाथ लगे हैं. ज्यादा दाम मिलेंगे.
चाचा चौधरी ! तुमने कहा था कि कल से यह नहीं होगा, मगर साबू के ही जूते चोरी हो गये ?
पुरोहित जी ! मैं खुद चाहता था कि साबू के जूते चोरी हो ✳ तभी चोर पकड़ा जायेगा.
जिसने मेरे बूट चुराये है मैं उसकी गर्दन तोड़ दूंगा.
✳ चाचा चौधरी का दिमाग कम्प्यूटर से तेज चलता है.


कहो धमाके ! यह जूते किसके उठाये लिए जा रहे हो ?
इंस्पेक्टर साहब ! यह मेरे हैं.
अगर यह तुम्हारे हैं तो जरा पहनकर दिखाओ !
वाह ! जूते तुम्हारे पांवों में खूब फिट आये हैं ?
वह रहा जूता चोर ! इसे मेरे हवाले करो. इसकी मरम्मत करनी है.
इसे कुछ दिन हमारा मेहमान रहने दो.
हम नहीं सुधरेंगे

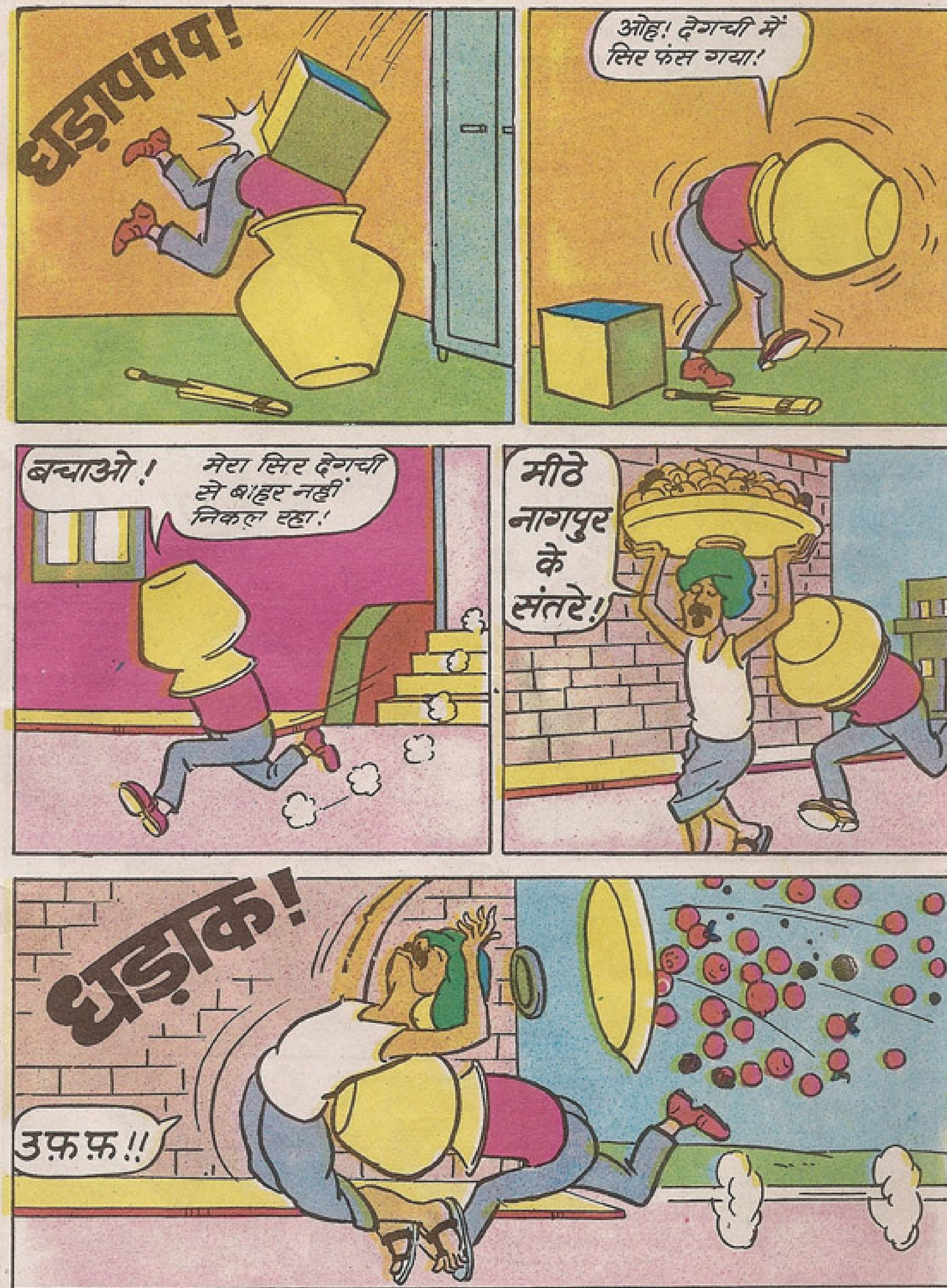

मरीज़ और डॉक्टर
हेलो! डाक्टर सलफ़रम क्लीनिक? ---मैं मिसेज बंशीन बोल रही हूं. मुझे बुखार है. देखने वाला घर में कोई नहीं. क्या आप आकर दवाई दे सकते हैं?
मैं आता हूं.
ट्रिनननन!!
अंदर आ जाइए. दरवाजा खुला है.
मिसेज बंशीन! घबराइए नहीं. मैं अभी इंजेक्शन देता हूं. आपका बुखार उतर जाएगा.
मेरे बेटे कुवैत, इराक और दूसरे अरब देशों में चले गए हैं. मेरी देखभाल करने वाला कोई नहीं.
इंजेक्शन लगते ही मिसेज बंशीन गहरी नींद सो गई.
665.

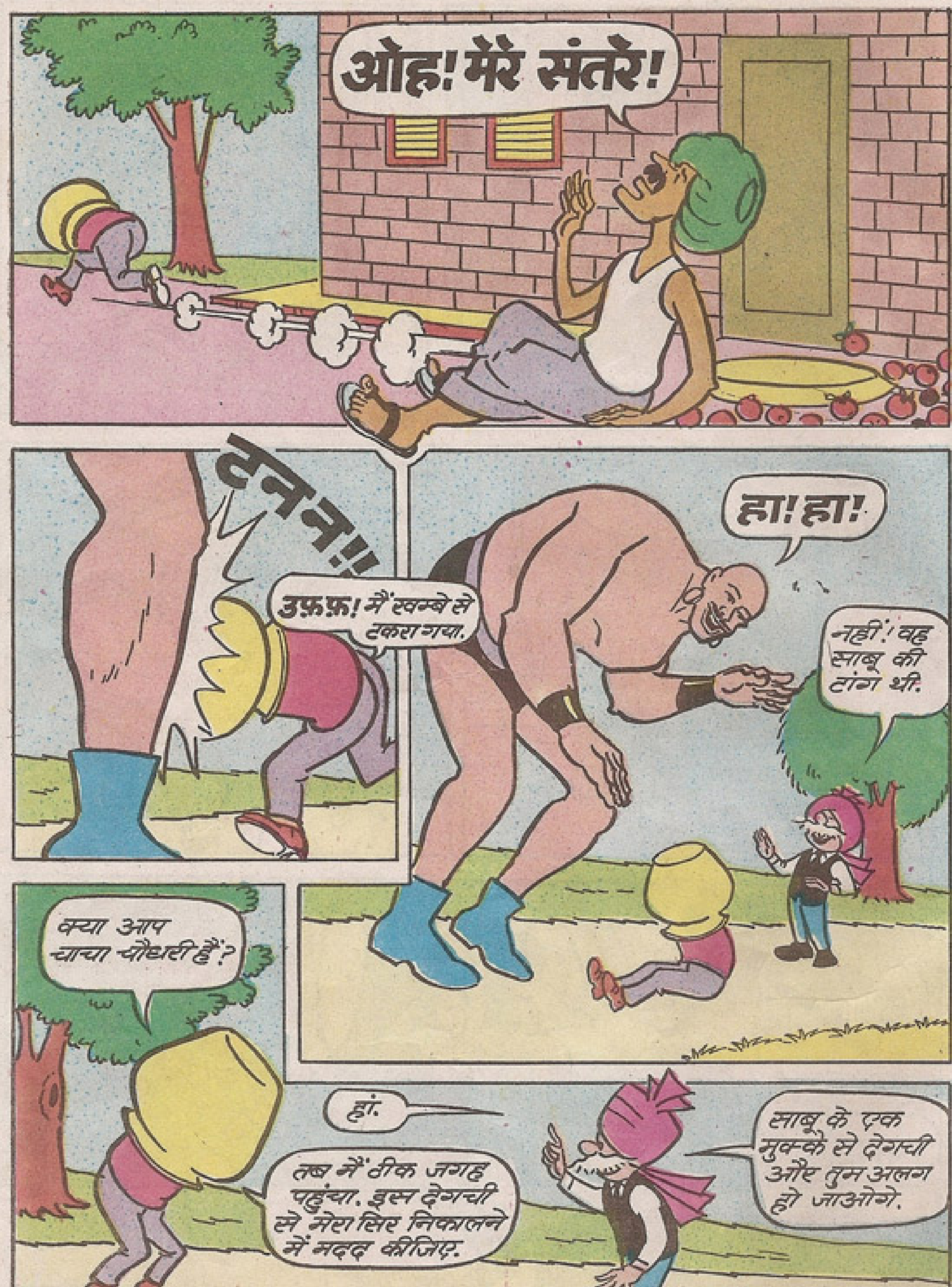

काफी देर बाद जब मिसेज बंशीन की नींद खुली तो---
ओह! मेरे कान, हाथ और गले के सारे जेवर गायब?
चाचा चौधरी? --- मैं मिसेज बंशीन बोल रही हूं. मेरे यहां चोरी हो गई है.
मैं अभी पहुंचता हूं.
बेचारी मिसेज बंशीन किसी न किसी मुसीबत में फंसी रहती है. असहाय जो ठहरी.
इंजेक्शन लगाया था बुखार उतारने के लिए. वह तो नहीं उतरा, मुझे नींद आ गई और कीमती जेवर चले गए.
फिक्र न करो, सब ठीक हो जाएगा.
उसने डाक्टर सलफ़रम को फ़ोन किया था.

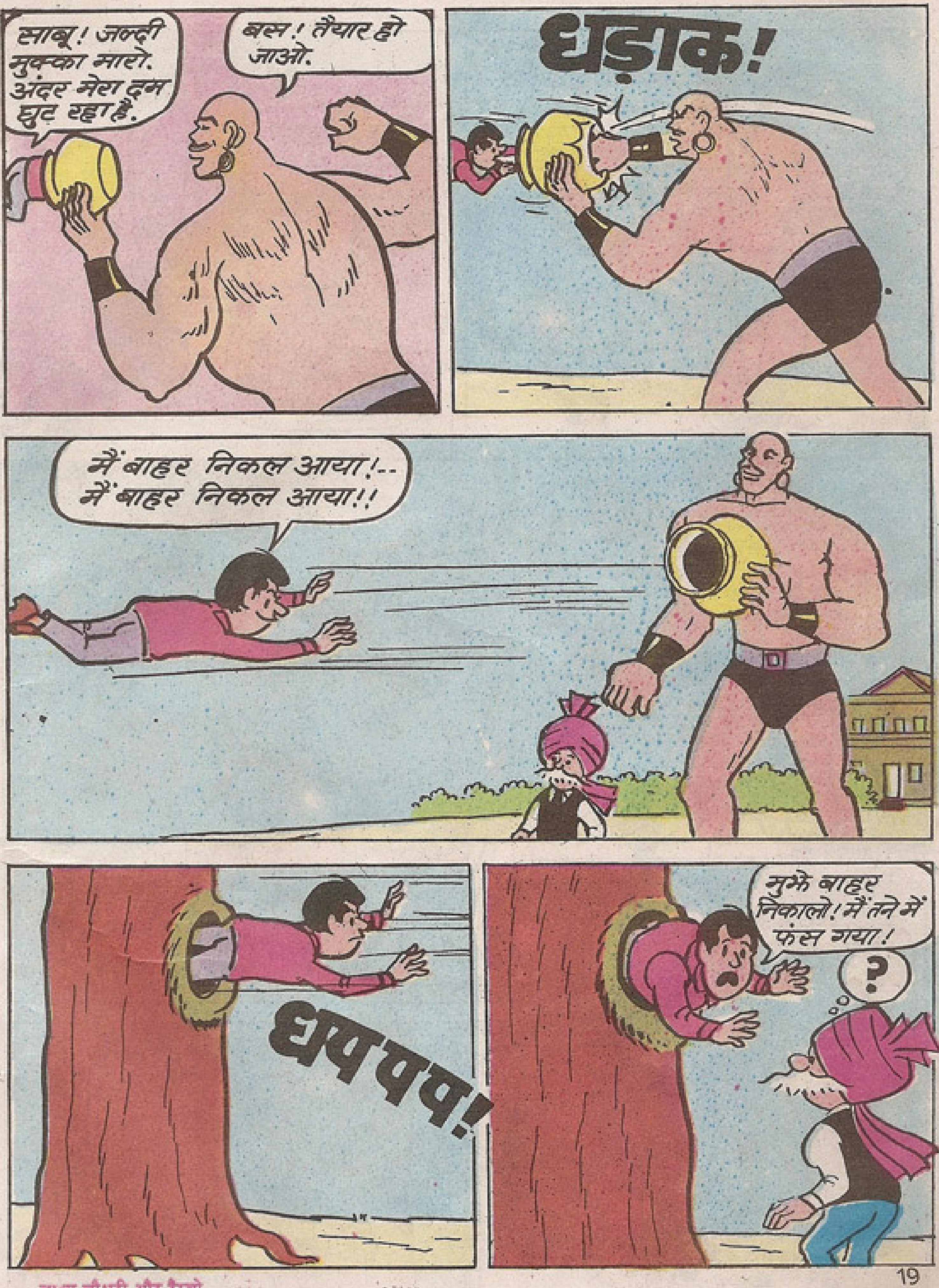

डाक्टर! तुम मिसेज बंशीन को देखने गए थे ?
मिसेज बंशीन ?
मैं आज किसी मरीज को देखने नहीं गया. मैं आज सारा दिन अपने घर रहा और आपके आने से दो मिनिट पहले ही इस क्लीनिक में आया हूं.
तो फिर मिसेज बंशीन के जेवर कौन उतार कर ले गया ?
मेरे पास इन फालतू बातों के लिए वक्त नहीं है. मैं अपने किसी मरीज को देखने जा रहा हूं.
मुझे अपने घर वापस जाना चाहिए.
भागवान! तुम्हें डाक्टर सलफ़रम के क्लीनिक में टेलीफ़ोन करना है कि तुम बीमार हो.
अरे, मैं तो भली चंगी हूं बीमार होएं मेरे दुश्मन.
भागवान! भले काम के लिए तुम्हें थोड़ा झूठ बोलना पड़ेगा.
हेलो!--- डाक्टर सलफ़रम क्लीनिक? मुझे बुखार है और मैं अकेली हूं.
फिक्र न करिए. मैं आ रहा हूं.

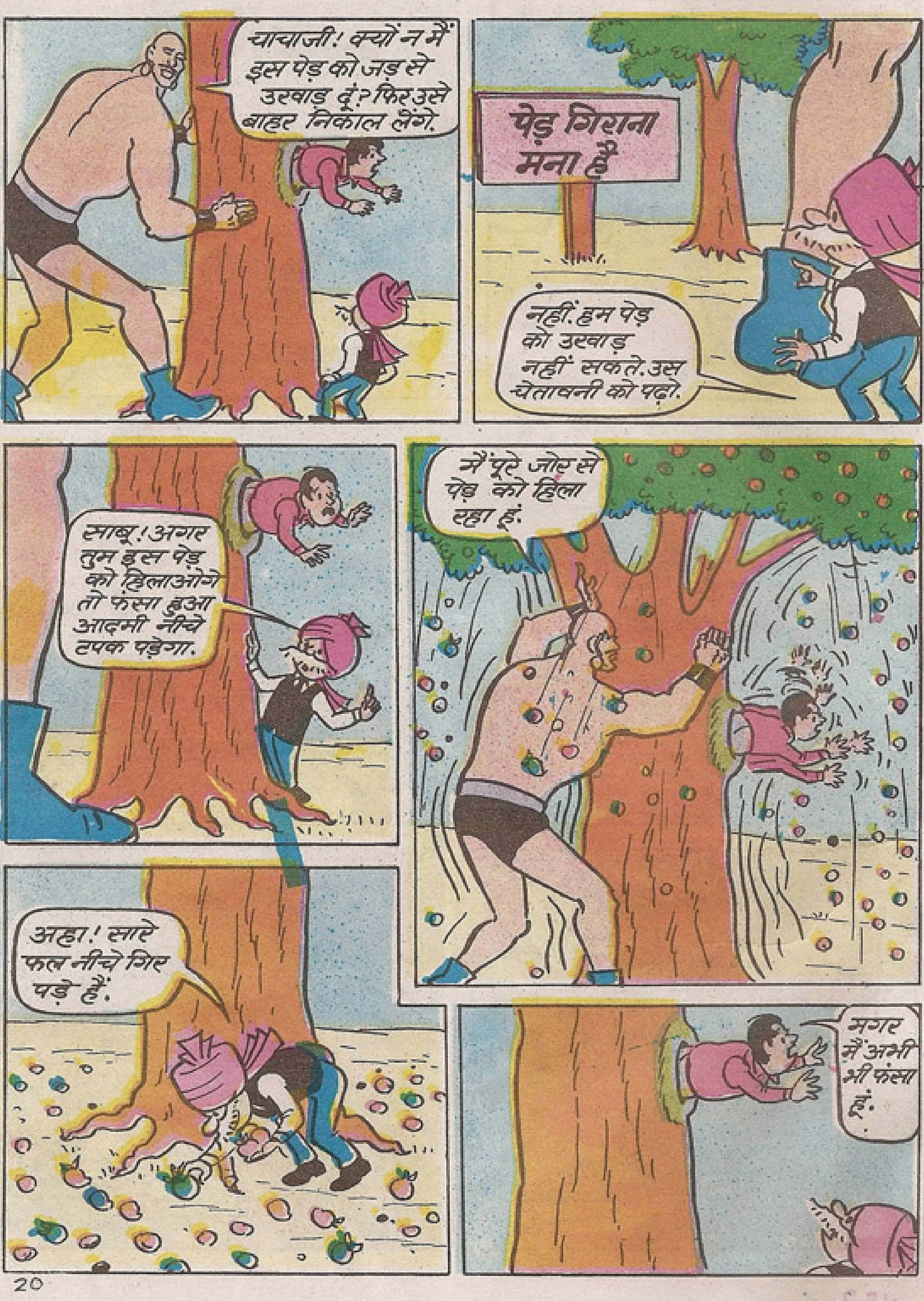

मिसेज चौधरी?
आ जाइए डाक्टर साहब! देखिए शरीर बुखार से तप रहा है. घर में देख-भाल करने वाला कोई नहीं.
घबराइए नहीं. इंजेक्शन से आपका बुखार मिनटों में उतर जाएगा.
आपके पति ने आपको सोने की काफी चूड़ियां पहनाई हैं.
खालिस 24 कैरेट की हैं.
इंजेक्शन के लिए हाथ ढीला छोड़ दीजिए.
ठहरो! पहले तुम्हारे इंजेक्शन की लेबोरेट्री में जांच होगी.
तुम?
मेरे पति. जिन की अभी तुम तारीफ़ कर रहे थे.
मिसेज बंशीन को भी तुमने इंजेक्शन लगाया था?
मैं जुर्म कबूल करता हूं. जो बीमार महिलाएं अकेली होती थीं, मैं नींद के इंजेक्शन लगाकर उन्हें सुला देता था. फिर उनके सारे जेवरात उतारकर रफूचक्कर हो जाता था.
डाक्टर सलफ़रम! तुम्हारा कम्पाउंडर. मैं इसे पुलिस स्टेशन ले जा रहा हूं.
मगर तुम्हें कैसे पता चला कि यह मेरा कम्पाउंडर है?
तुम्हारी गैरहाजरी में और कौन टेलीफ़ोन पर बात कर सकता है?
© PRAN'S FEATURES

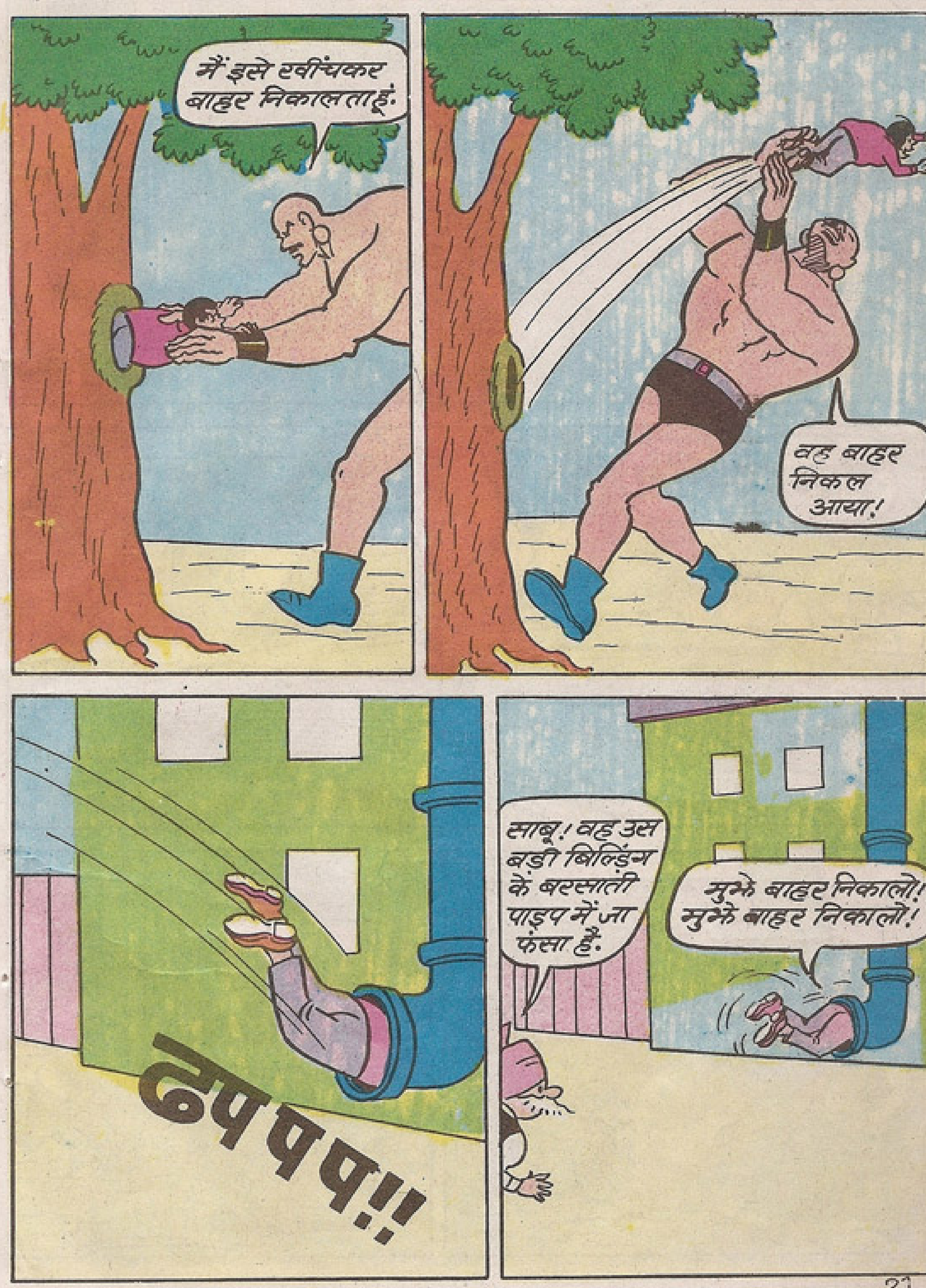

सोम की गेंद
रुकमणी! मेरी क्रिकेट की गेंद कहां है? मिल नहीं रही.
मैंने उसे दूसरे कमरे में देगची में रखा था.
सोम! मैं दूध लेने जा रही हूं. जब बाहर जाओ तो घर का दरवाजा बंद कर जाना.
वह रही देगची. उसी में गेंद होगी.
हां, वह इसी में है. मुझे दिखायी दे रही है. पर हाथ उस तक पहुंच नहीं पा रहा.
जरा और झुकना पड़ेगा... गेंद हाथ आ गयी.
678/1988


धड़ापपप!
ओह! देगची में सिर फंस गया!
बचाओ!
मेरा सिर देगची से बाहर नहीं निकल रहा!
मीठे नागपुर के संतरे!
धड़ाक!
उफ़फ़!!

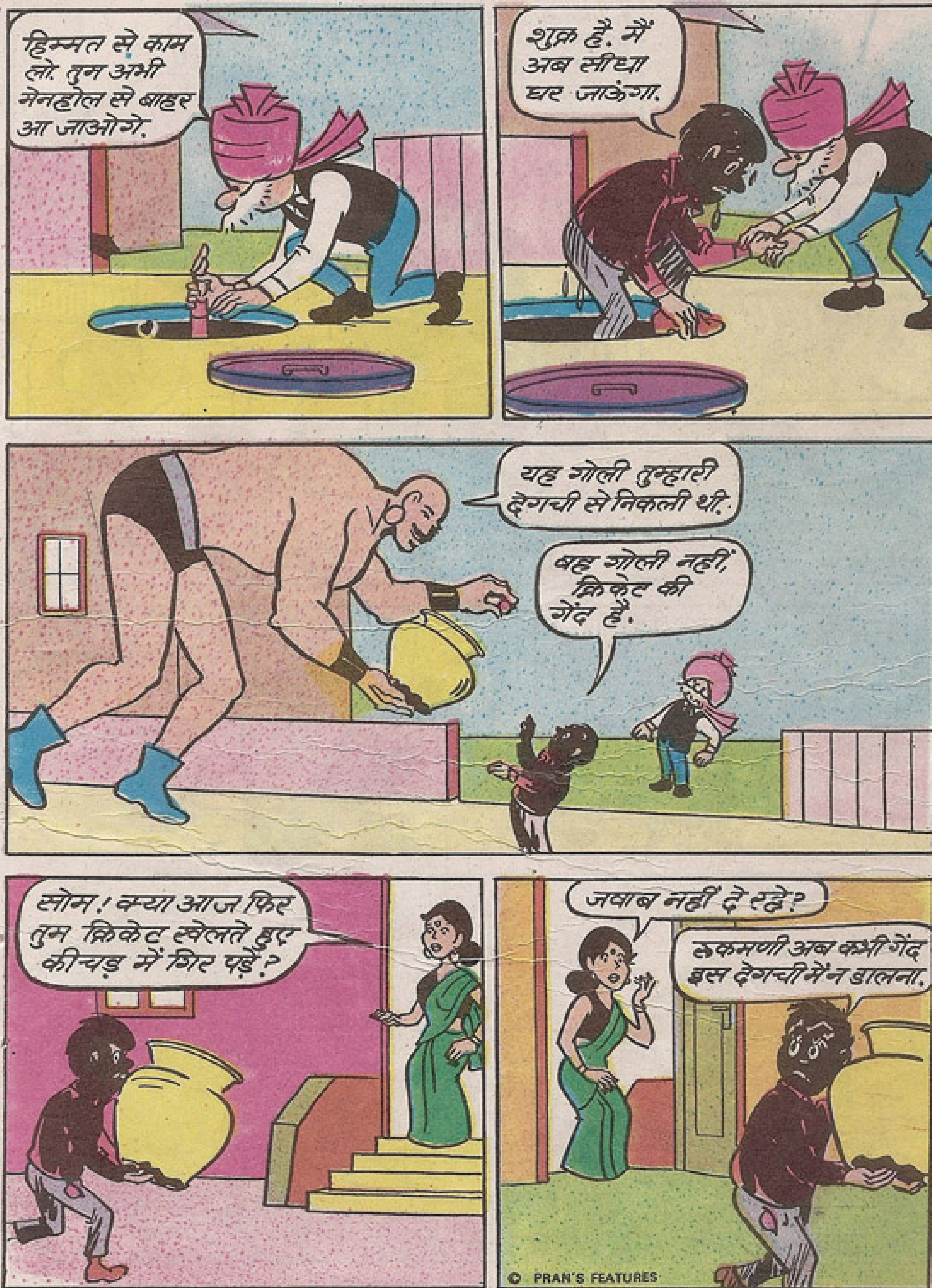

ओह! मेरे संतरे!
ठनन!!
उफ़्फ़! मैं खम्बे से टकरा गया.
हा! हा!
नहीं! वह साबू की टांग थी.
क्या आप चाचा चौधरी हैं?
हां.
तब मैं ठीक जगह पहुंचा. इस देगची से मेरा सिर निकालने में मदद कीजिए.
साबू के एक मुक्के से देगची और तुम अलग हो जाओगे.

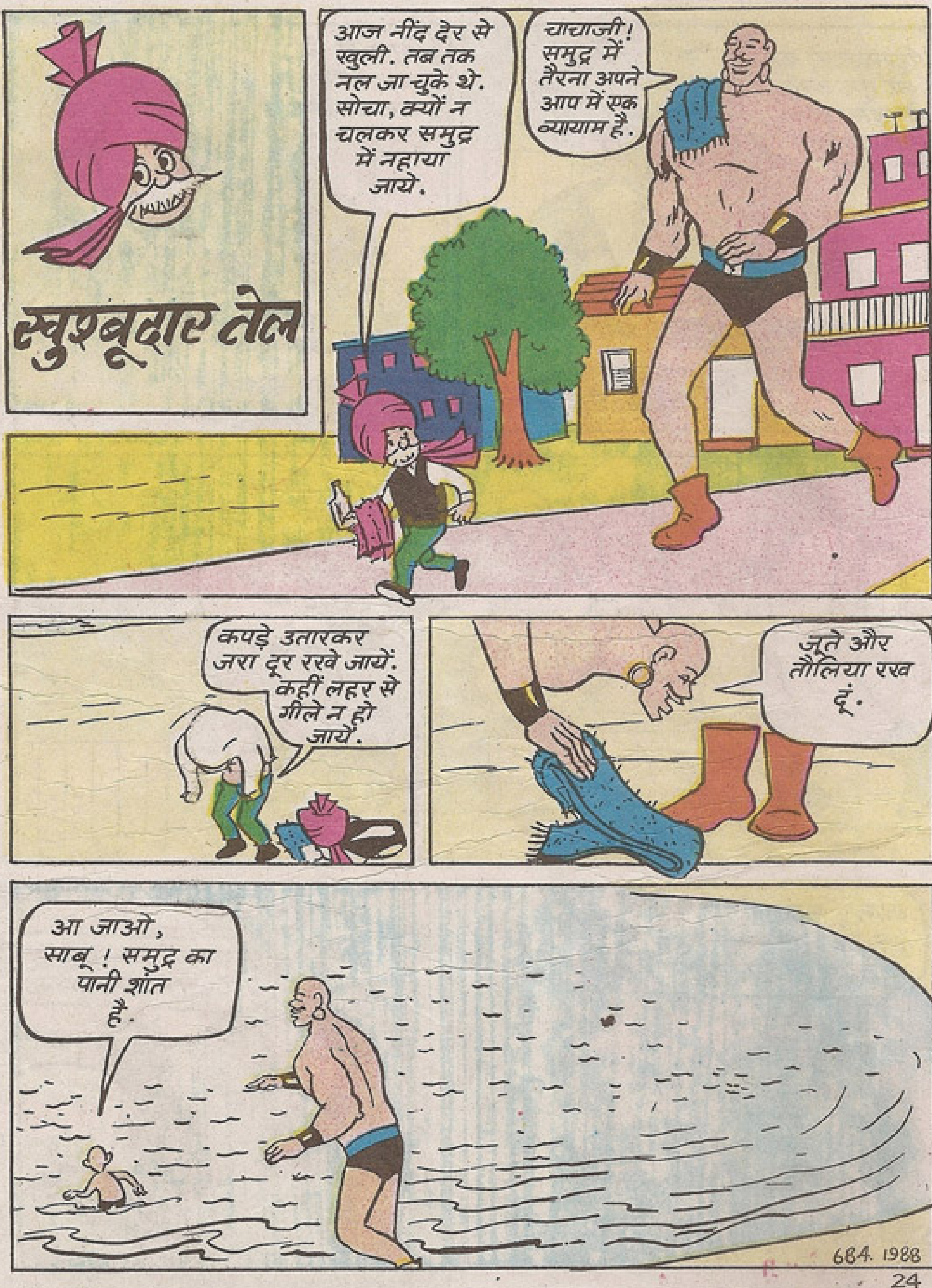

साबू! जल्दी मुक्का मारो. अंदर मेरा दम घुट रहा है.
बस! तैयार हो जाओ.
धड़ाक!
मैं बाहर निकल आया!-- मैं बाहर निकल आया!!
धपपप!
मुझे बाहर निकालो! मैं तने में फंस गया!
?

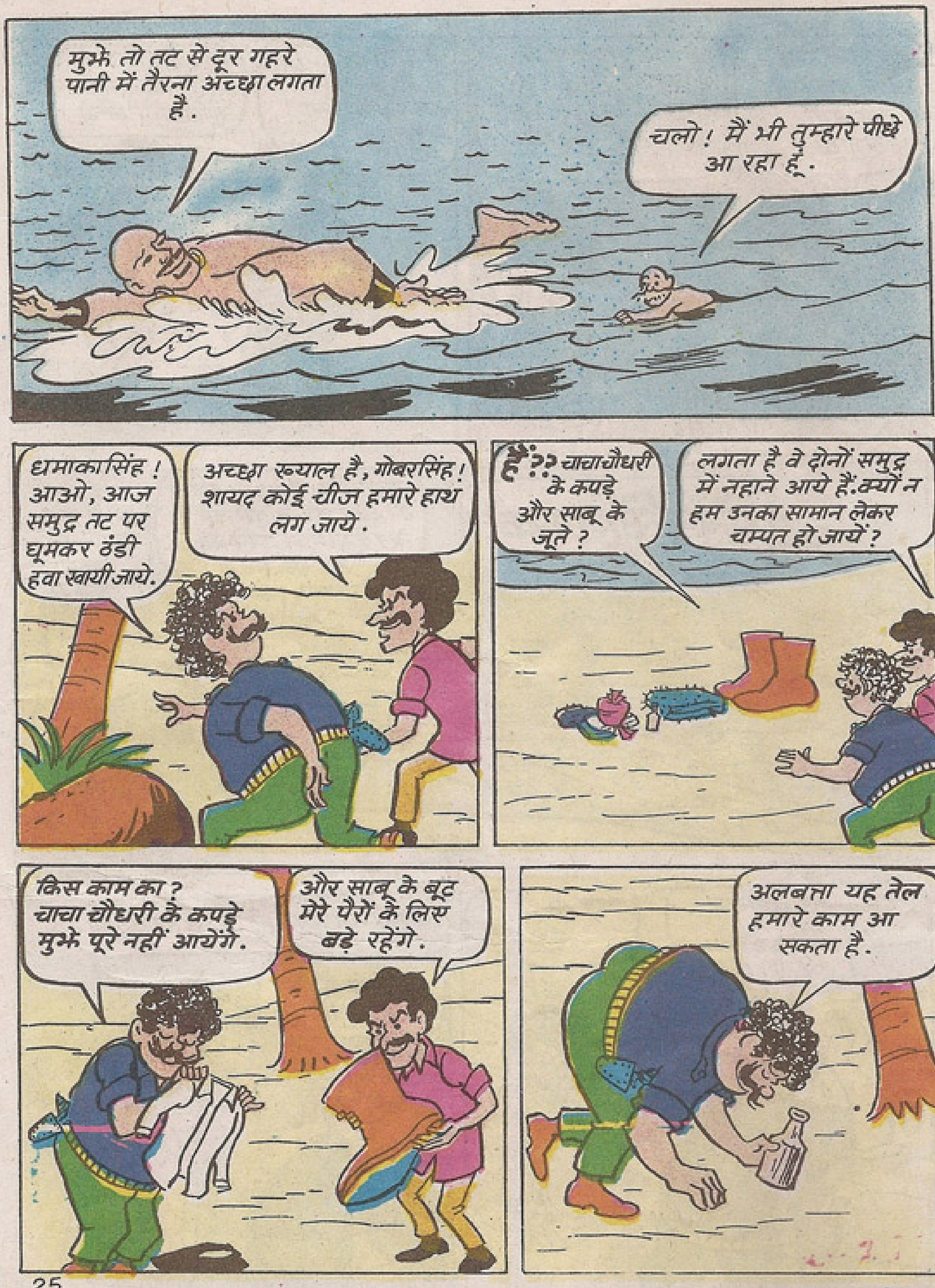

चाचाजी! क्यों न मैं इस पेड़ को जड़ से उखाड़ दूं? फिर उसे बाहर निकाल लेंगे.
पेड़ गिराना मना है
नहीं. हम पेड़ को उखाड़ नहीं सकते. उस चेतावनी को पढ़ो.
साबू! अगर तुम इस पेड़ को हिलाओगे तो फंसा हुआ आदमी नीचे टपक पड़ेगा.
मैं पूरे जोर से पेड़ को हिला रहा हूं.
अहा! सारे फल नीचे गिर पड़े हैं.
मगर मैं अभी भी फंसा हूं.


मैं इसे खींचकर बाहर निकालता हूं.
वह बाहर निकल आया!
ठपपप!!
साबू! वह उस बड़ी बिल्डिंग के बरसाती पाइप में जा फंसा है.
मुझे बाहर निकालो! मुझे बाहर निकालो!


घबराओ मत! मैं तुम्हें पाइप में से निकालने आ रहा हूं.
ओह! पानी!!
कहां गया वह?
बचाओ!

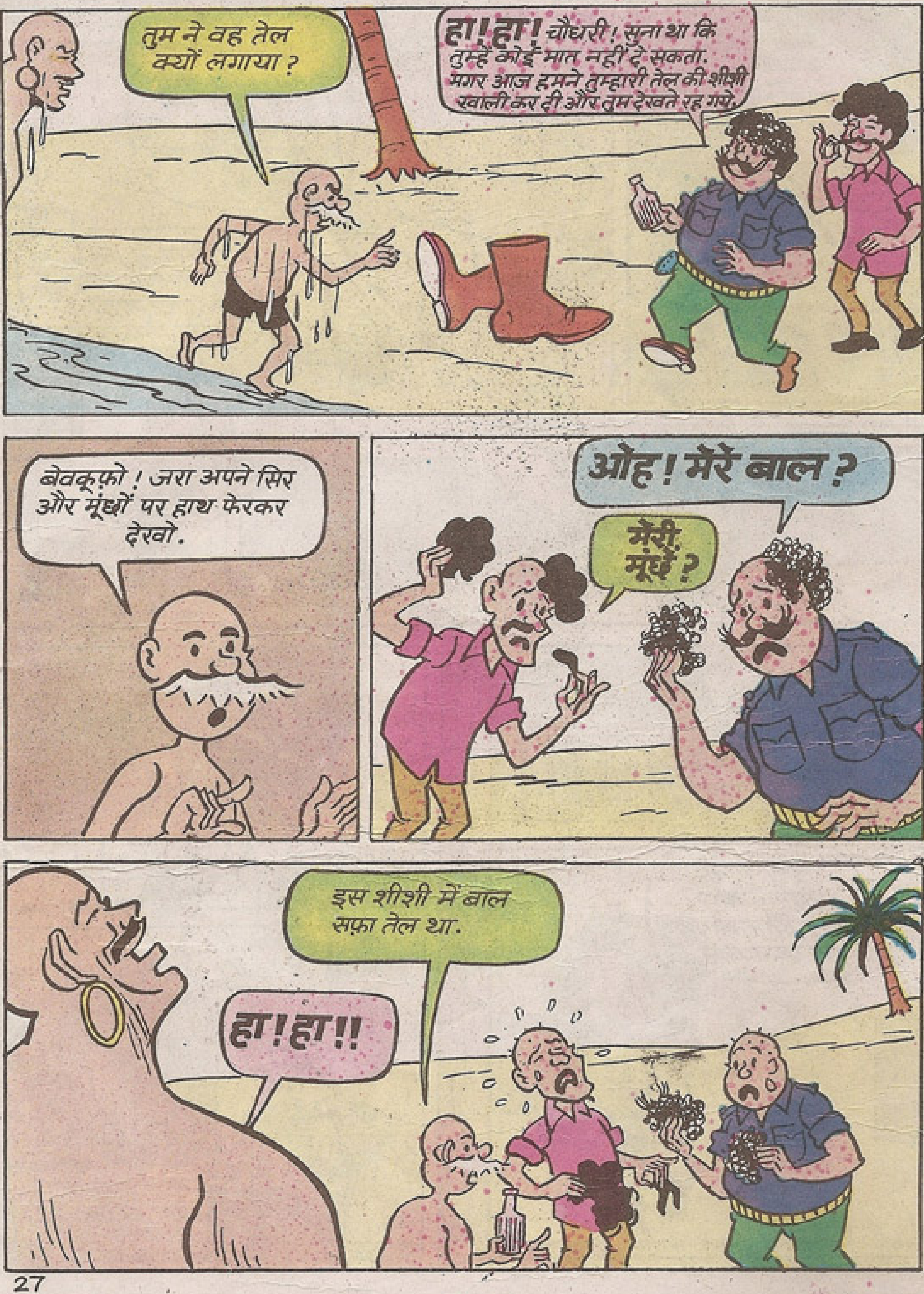

हिम्मत से काम लो. तुम अभी मेनहोल से बाहर आ जाओगे.
शुक्र है. मैं अब सीधा घर जाऊंगा.
यह गोली तुम्हारी देगची से निकली थी.
वह गोली नहीं, क्रिकेट की गेंद है.
सोम! क्या आज फिर तुम क्रिकेट खेलते हुए कीचड़ में गिर पड़े?
जवाब नहीं दे रहे?
रुकमणी अब कभी गेंद इस देगची में न डालना.
© PRAN'S FEATURES

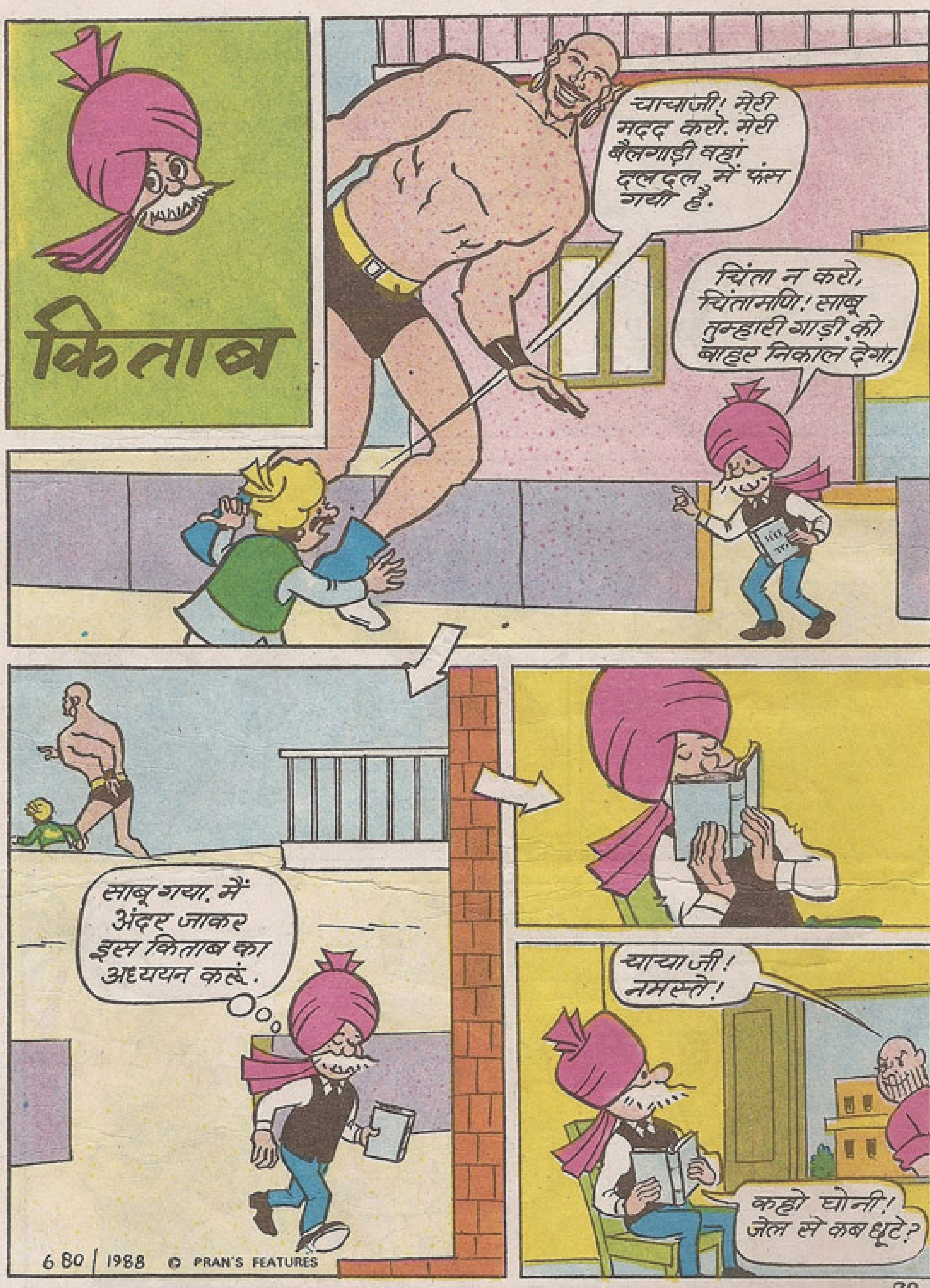

खुशबूदार तेल
आज नींद देर से खुली. तब तक नल जा चुके थे. सोचा, क्यों न चलकर समुद्र में नहाया जाये.
चाचाजी! समुद्र में तैरना अपने आप में एक व्यायाम है.
कपड़े उतारकर जरा दूर रखे जायें. कहीं लहर से गीले न हो जायें.
जूते और तौलिया रख दूं.
आ जाओ, साबू! समुद्र का पानी शांत है.
684. 1988


मुझे तो तट से दूर गहरे पानी में तैरना अच्छा लगता है.
चलो! मैं भी तुम्हारे पीछे आ रहा हूं.
धमाकासिंह! आओ, आज समुद्र तट पर घूमकर ठंडी हवा खायी जाये.
अच्छा ख्याल है, गोबरसिंह! शायद कोई चीज हमारे हाथ लग जाये.
हैं?? चाचा चौधरी के कपड़े और साबू के जूते?
लगता है वे दोनों समुद्र में नहाने आये हैं. क्यों न हम उनका सामान लेकर चम्पत हो जायें?
किस काम का? चाचा चौधरी के कपड़े मुझे पूरे नहीं आयेंगे.
और साबू के बूट मेरे पैरों के लिए बड़े रहेंगे.
अलबत्ता यह तेल हमारे काम आ सकता है.



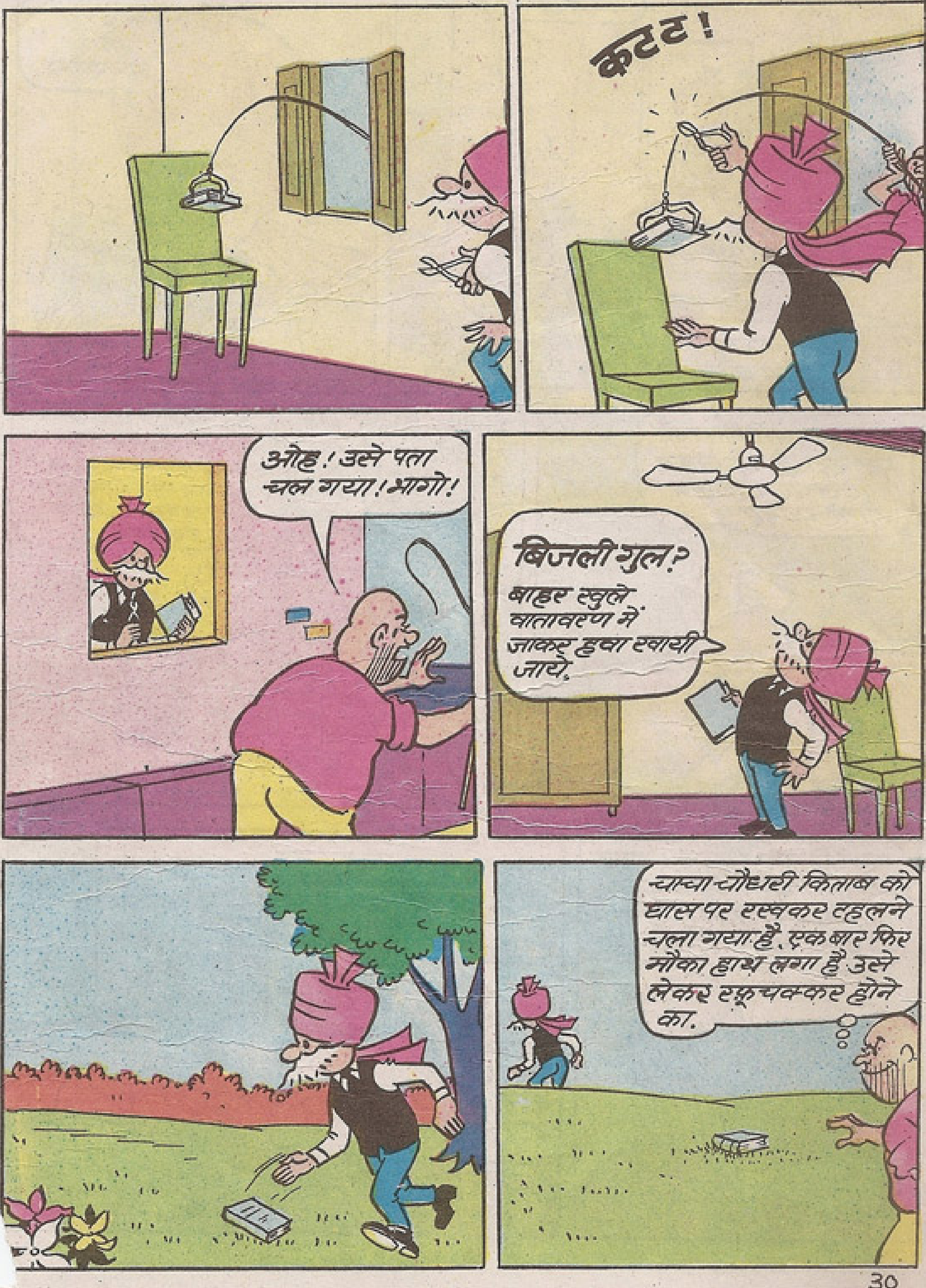
बड़े दिनों से मैंने अपने बालों में तेल नहीं लगाया.
शीशी से भीनी भीनी खुशबू आ रही है. मन करता है कि सारी शीशी, अपने बालों में उंडेल लूं.
वे दोनों दूर समुद्र में हैं; इसलिए हमें रोकने वाला यहां कोई नहीं.
फिर देर किस बात की? बालों को चमका लो सुगंधित तेल से.
गोबरसिंह! रुको!
चाचा चौधरी! अब दुनिया की कोई ताकत हमें यह तेल इस्तेमाल करने से नहीं रोक सकती!
चौधरी की आज एक नहीं चल सकती.
वाह! बाल चमाचम हो गये.
मैं भी लगा लूं.
सचमुच तेल मलते ही सिर में तरावट आ गयी.
मेरी मूंछें रौबीली हो गयी.


तुम ने वह तेल क्यों लगाया ?
हा! हा! चौधरी ! सुना था कि तुम्हें कोई मात नहीं दे सकता. मगर आज हमने तुम्हारी तेल की शीशी खाली कर दी और तुम देखते रह गये.
बेवकूफ़ो ! जरा अपने सिर और मूंछों पर हाथ फेरकर देखो.
ओह ! मेरे बाल ?
मेरी मूंछें ?
इस शीशी में बाल सफ़ा तेल था.
हा ! हा !!

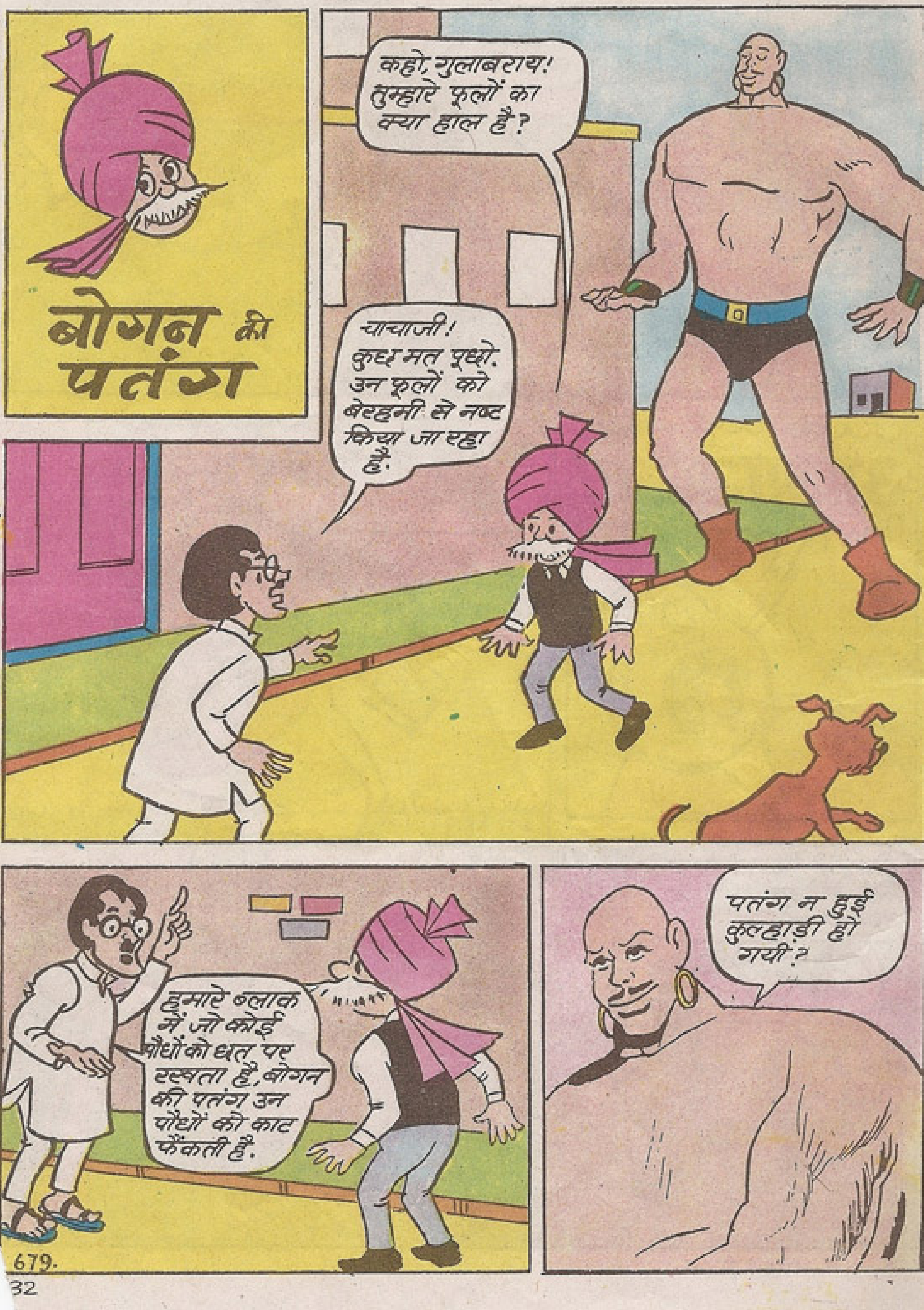

किताब
चाचाजी! मेरी मदद करो. मेरी बैलगाड़ी वहां दलदल में फंस गयी है.
चिंता न करो, चिंतामणि! साबू तुम्हारी गाड़ी को बाहर निकाल देगा.
साबू गया, मैं अंदर जाकर इस किताब का अध्ययन करूं.
चाचा जी! नमस्ते!
कहो घोनी! जेल से कब छूटे?
6 80 / 1988 © PRAN'S FEATURES

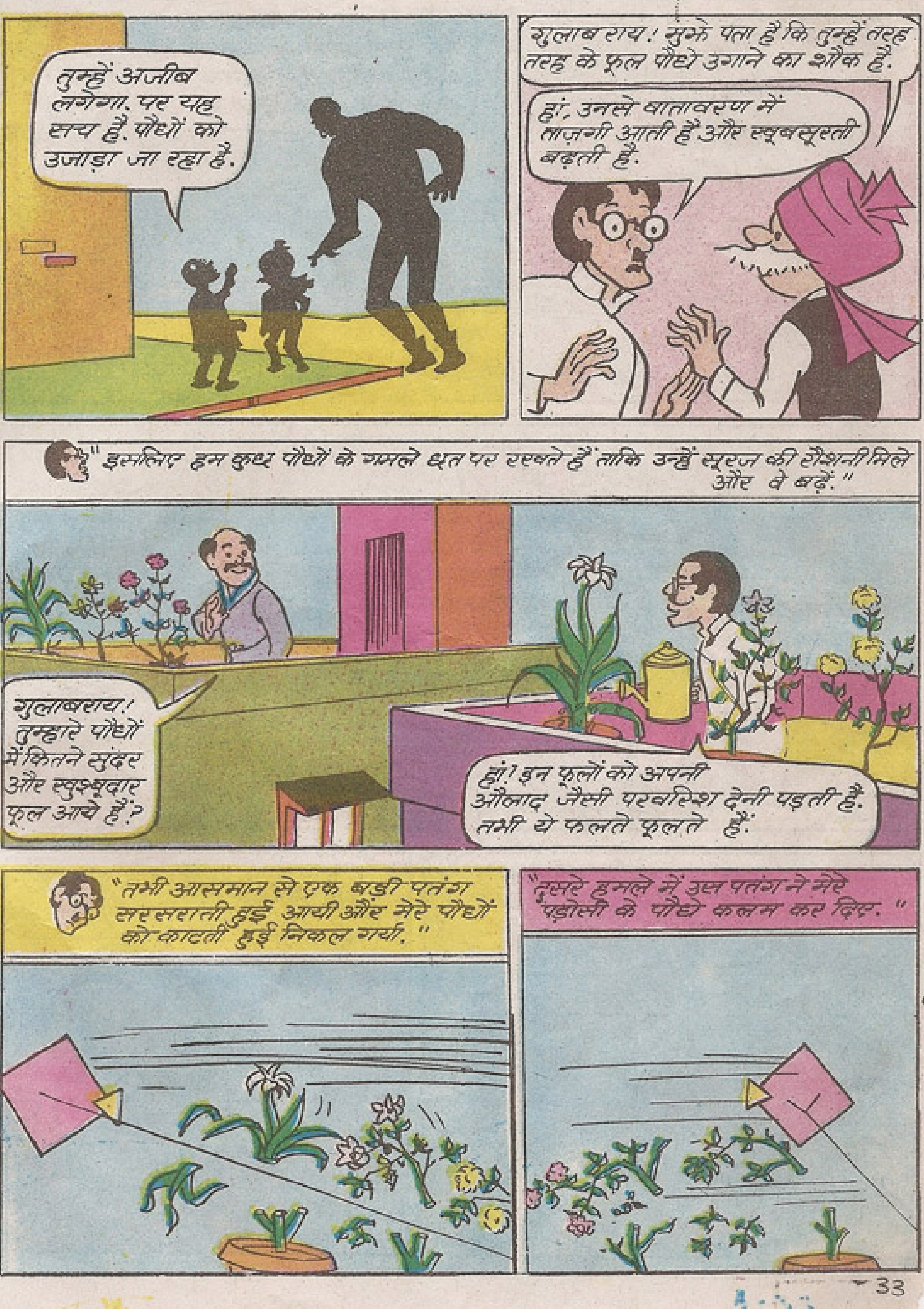


आज ही.
उम्मीद है, अब तुम उठाईगिरी से बाज़ आओगे.
चाचाजी! आपके हाथ में कौन सी किताब है?
कौटल्य का अर्थशास्त्र.
अर्थशास्त्र कौटल्य
चाचा चौधरी जिस को पढ़ रहा है वह जरूर दिलचस्प किताब होनी चाहिए.
मास्टर जी! क्या कौटल्य किसी टी. वी. सीरियल के एक्टर का नाम है?
घोनी! तभी मैं तुमसे कहता था कि नकल करके पास होने से एक कागज, जिसे सर्टिफिकेट कहते हैं, जरूर मिल जाता है, मगर ज्ञान नहीं आता. कौटल्य एक महान कूटनीतिज्ञ था जिसका लिखा अर्थशास्त्र राजनीति का अद्वितीय ग्रंथ है.
यही किताब पढ़कर शायद चाचा चौधरी तीक्ष्ण बुद्धि का बन गया है. मैं इस किताब को जरूर हथियाऊंगा.
वह रही किताब. उसका मालिक भी दिखाई नहीं देता. मैं उसे उठा लेता हूं.

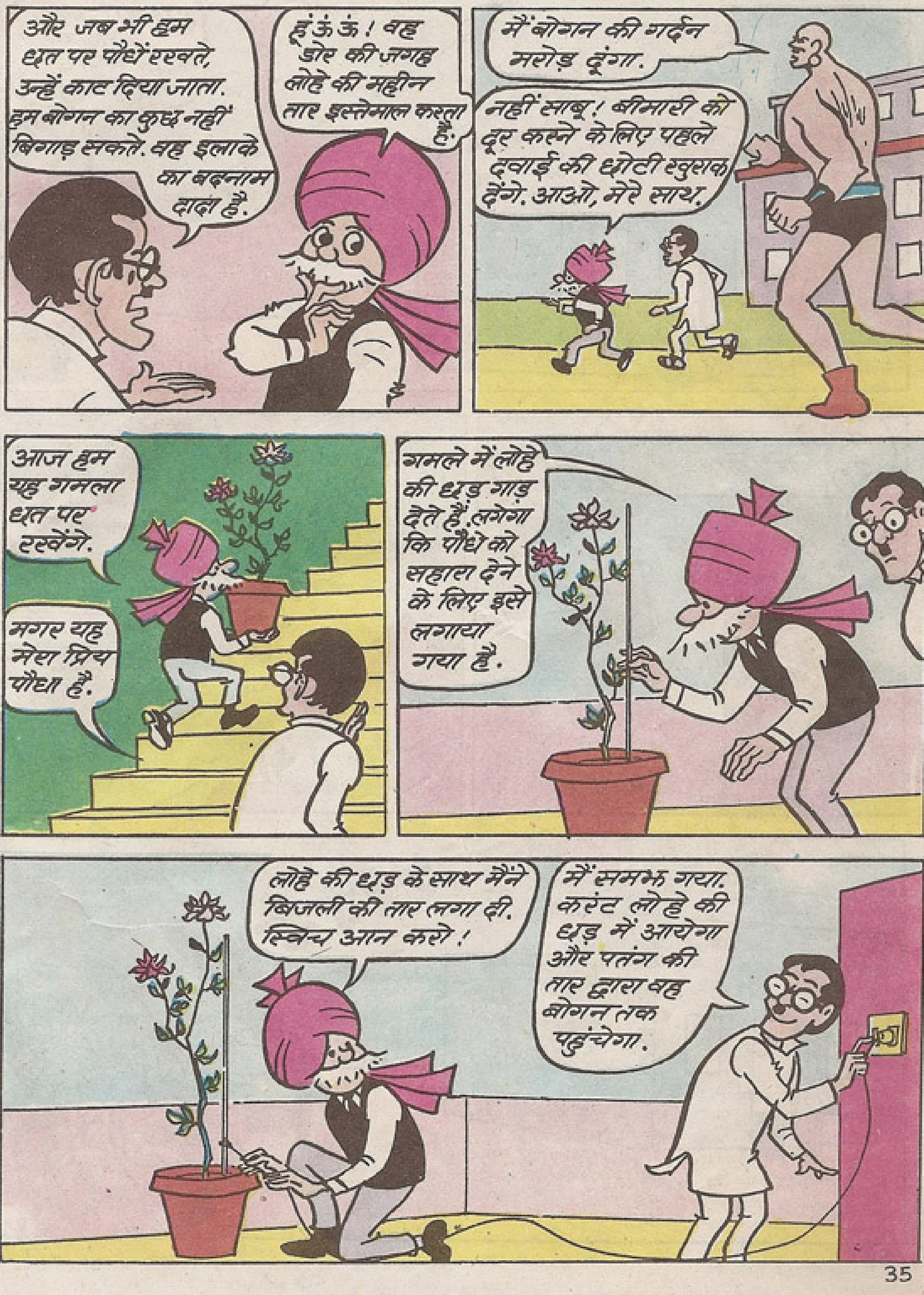

कटट !
ओह ! उसे पता चल गया ! भागो !
बिजली गुल ?
बाहर खुले वातावरण में जाकर हवा खायी जाये.
चाचा चौधरी किताब को घास पर रखकर टहलने चला गया है. एक बार फिर मौका हाथ लगा है उसे लेकर रफूचक्कर होने का.

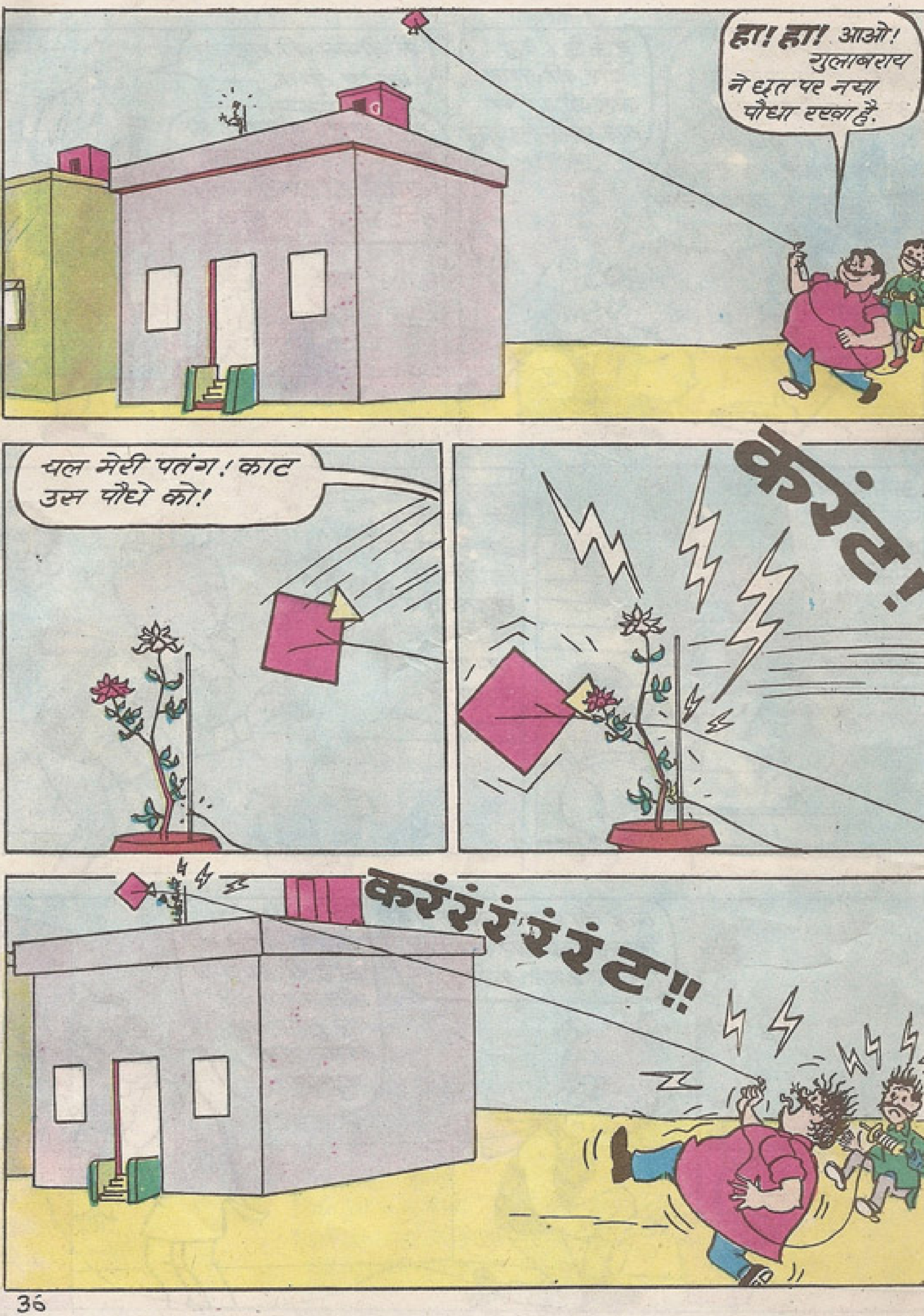

देखो! वह आदमी आपकी किताब उठाना चाहता है.
उठायेगा तो पछताएगा.
आआऊऊ!!
बिच्छू ने काट लिया!
बिच्छू के बिल को ढकने के लिए मैंने उस पर किताब रख दी थी.


बोगन की पतंग
कहो, गुलाबराय! तुम्हारे फूलों का क्या हाल है?
चाचाजी! कुछ मत पूछो. उन फूलों को बेरहमी से नष्ट किया जा रहा है.
हमारे ब्लाक में जो कोई पौधों को छत पर रखता है, बोगन की पतंग उन पौधों को काट फेंकती है.
पतंग न हुई कुल्हाड़ी हो गयी?
679.


तुम्हें अजीब लगेगा. पर यह सच है. पौधों को उजाड़ा जा रहा है.
गुलाबराय! मुझे पता है कि तुम्हें तरह तरह के फूल पौधे उगाने का शौक है.
हां, उनसे वातावरण में ताज़गी आती है और खूबसूरती बढ़ती है.
"इसलिए हम कुछ पौधों के गमले छत पर रखते हैं ताकि उन्हें सूरज की रोशनी मिले और वे बढ़ें."
गुलाबराय! तुम्हारे पौधों में कितने सुंदर और खुश्बूदार फूल आये हैं?
हां! इन फूलों को अपनी औलाद जैसी परवरिश देनी पड़ती है. तभी ये फलते फूलते हैं.
"तभी आसमान से एक बड़ी पतंग सरसराती हुई आयी और मेरे पौधों को काटती हुई निकल गयी."
"दूसरे हमले में उस पतंग ने मेरे पड़ोसी के पौधे कलम कर दिए."


ओह! मेरे पौधे!
यह बोगन की करतूत है. मैंने फूल उगाने में कितनी मेहनत की थी? कितना खाद और पानी दिया था?
बोगन! तेरा सत्यानाश हो!
बोगन! तुमने हमारी महीनों की मेहनत पर पानी फेर दिया. कोमल फूलों को काट फैंका.
क्यों? क्या पतंग उड़ाना जुर्म है?
मगर तुम स्टील की महीन तार से पतंग उड़ाते हो और जानबूझ कर हमारे पौधे काटते हो.
हो! हो! दरअसल तुम्हारे पौधे काटने से मेरा मनोरंजन होता है.

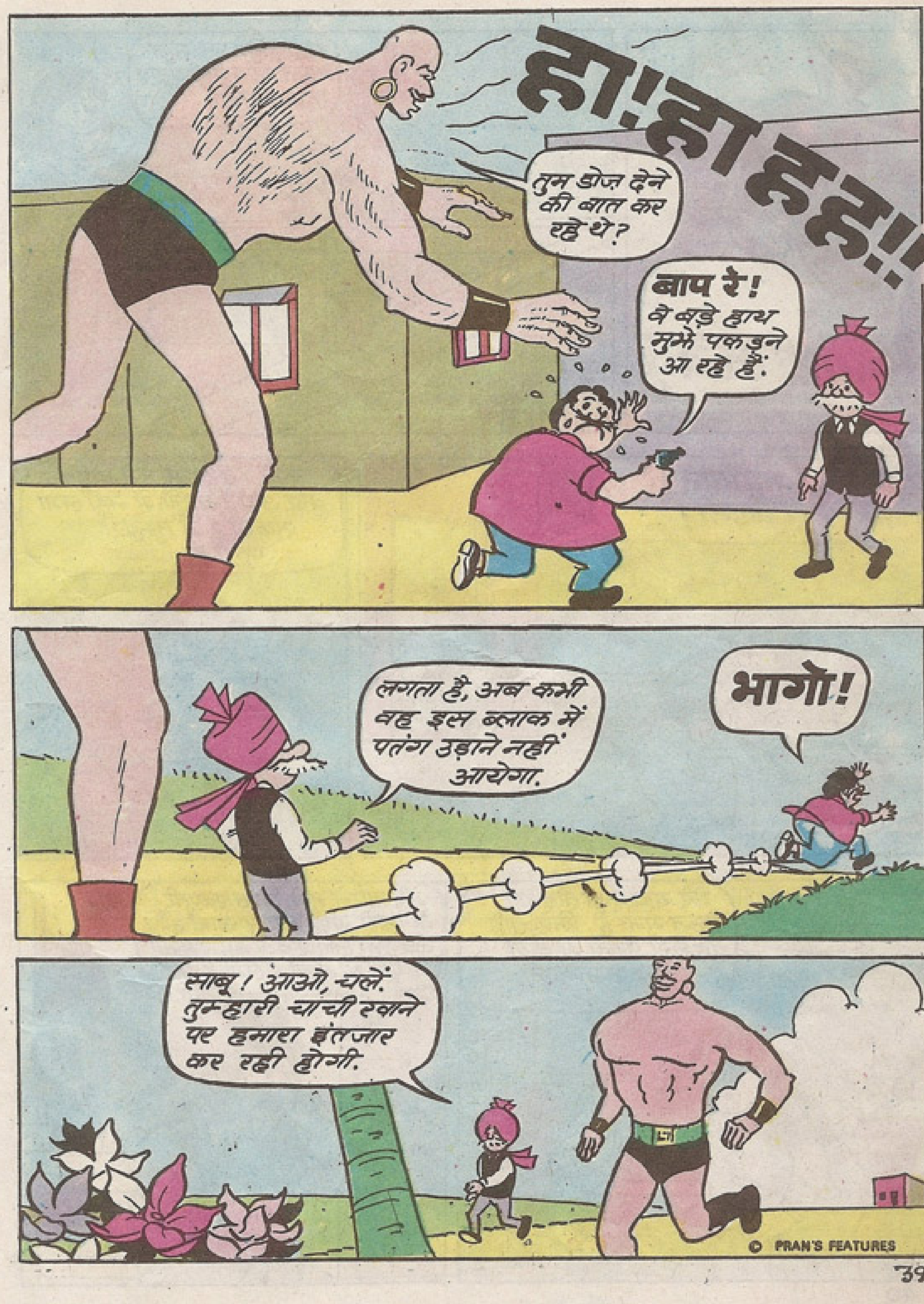

और जब भी हम छत पर पौधें रखते, उन्हें काट दिया जाता. हम बोगन का कुछ नहीं बिगाड़ सकते. वह इलाके का बदनाम दादा है.
हूंऊंऊं! वह डोर की जगह लोहे की महीन तार इस्तेमाल करता है.
मैं बोगन की गर्दन मरोड़ दूंगा.
नहीं साबू! बीमारी को दूर करने के लिए पहले दवाई की छोटी खुराक देंगे. आओ, मेरे साथ.
आज हम यह गमला छत पर रखेंगे.
मगर यह मेरा प्रिय पौधा है.
गमले में लोहे की छड़ गाड़ देते हैं. लगेगा कि पौधे को सहारा देने के लिए इसे लगाया गया है.
लोहे की छड़ के साथ मैंने बिजली की तार लगा दी. स्विच आन करो!
मैं समझ गया. करंट लोहे की छड़ में आयेगा और पतंग की तार द्वारा वह बोगन तक पहुंचेगा.

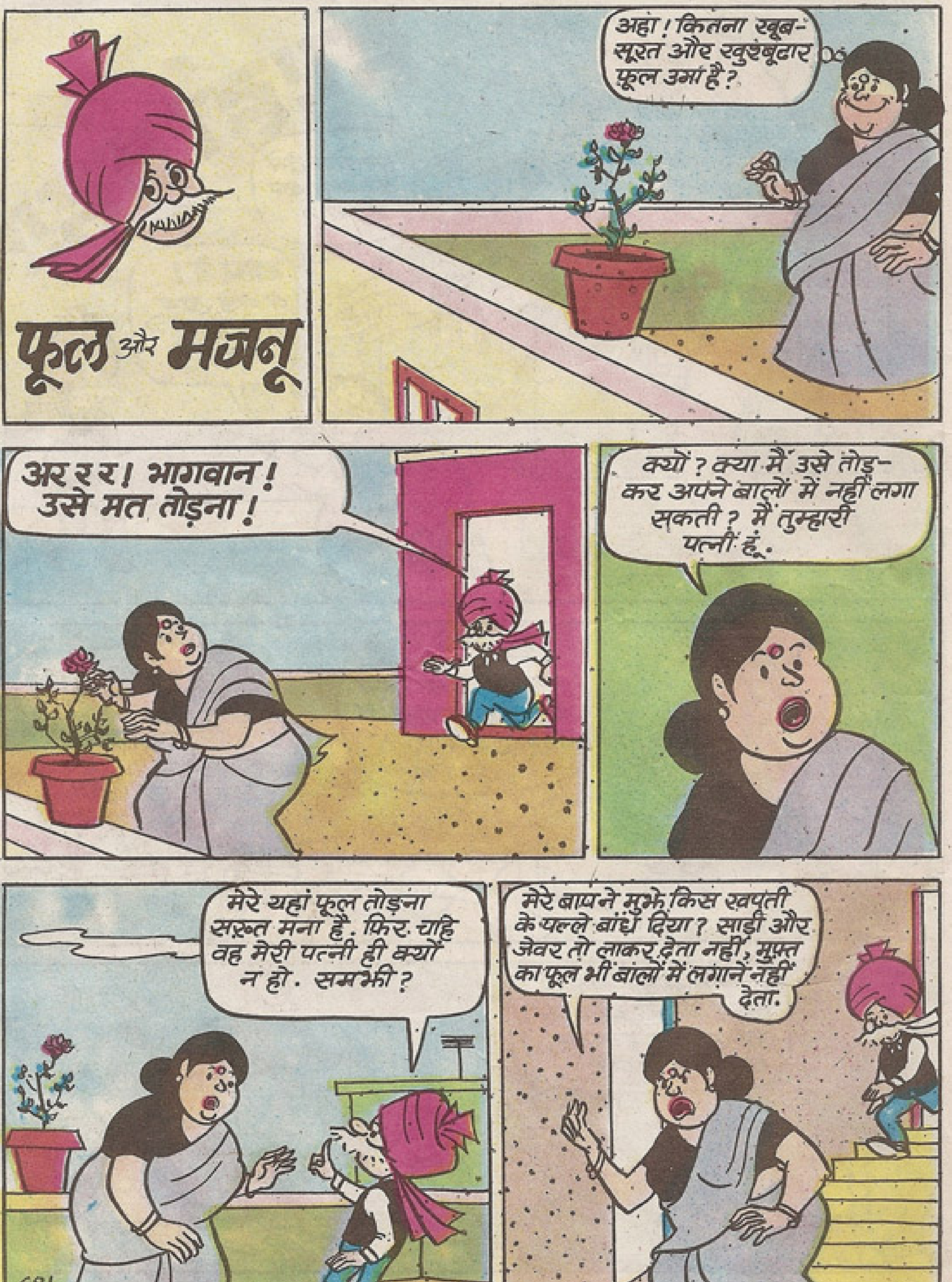


हा! हा! आओ! गुलाबराय ने छत पर नया पौधा रक्खा है.
चल मेरी पतंग! काट उस पौधे को!
करंट!
करंरंरंरंट!!

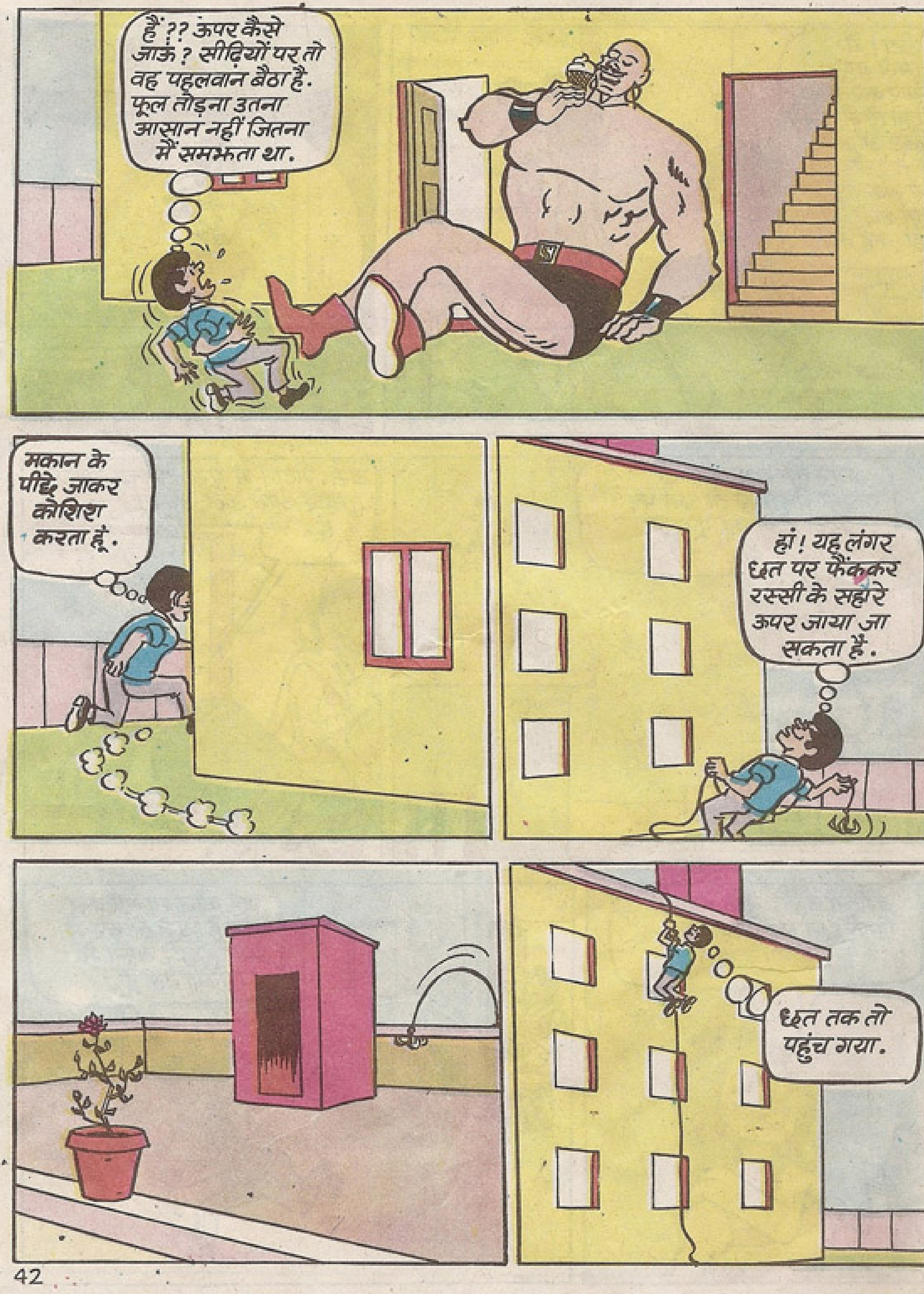

हा!हा!!
बोगान! कहो कैसी रही? आज तुम्हारी 'डोर' की धार कहां गयी?
!?
लाल पगड़ी वाले! तुमने बोगात के साथ मज़ाक करके अच्छा नहीं किया. मैं तुम दोनों को उठाकर गेंद की तरह नीचे फैंक दूंगा.
तुमसे बदला लेने के लिए मैं आ रहा हूं.
बचाओ!
गुस्से में आदमी अंधा हो जाता है. सीढ़ियों पर पड़ा हुआ रोलर भी उसे दिखायी नहीं देता.
फिसलना!

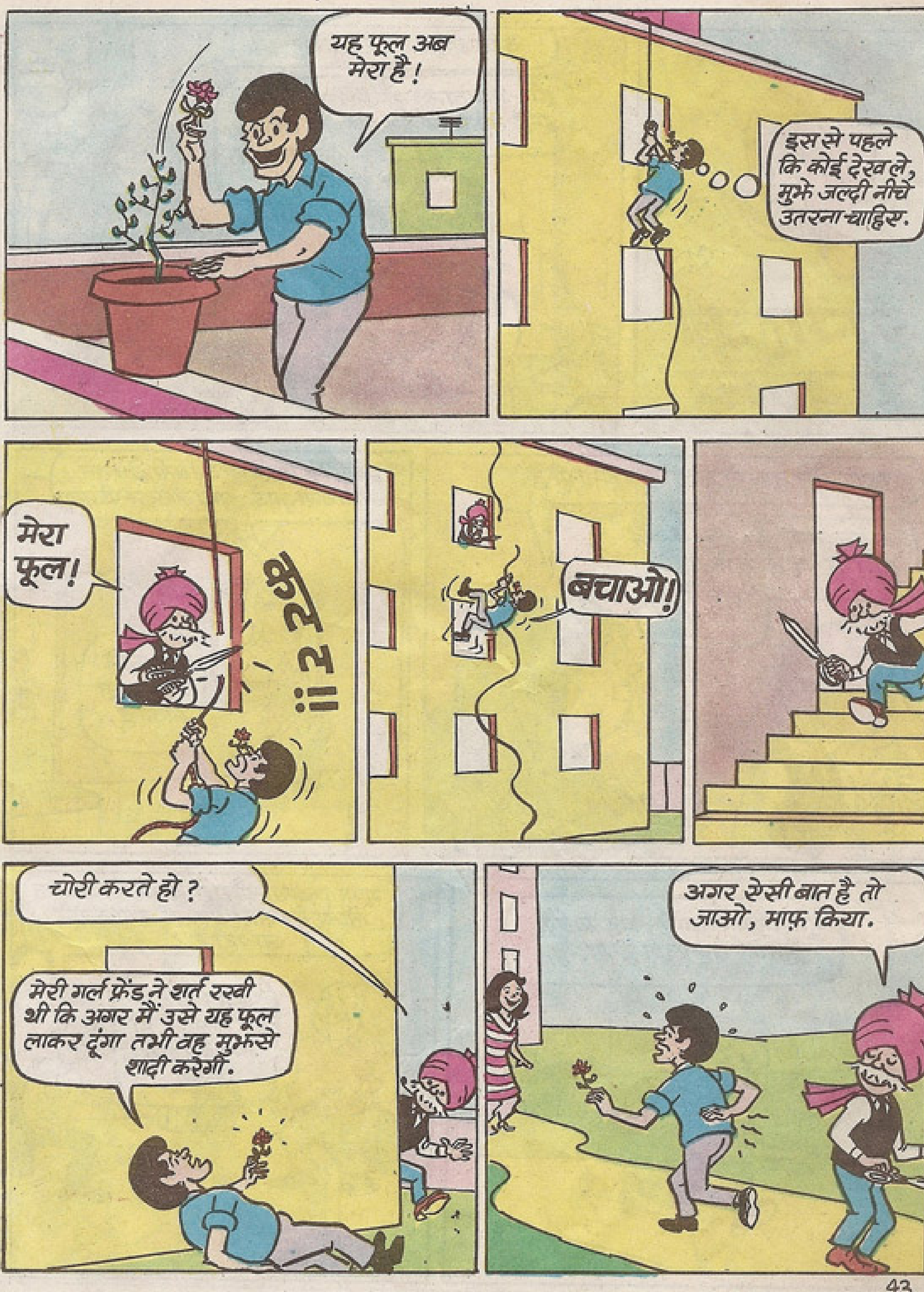

धड़ाम!
अब मेरे गुस्से की आग और भड़क उठी है. मैं लाल पगड़ी वाले को गोलियों से भून दूंगा.
अच्छा, गुलाबराय! चलता हूं. मुझे उम्मीद है, बोगन अब तुम्हें परेशान नहीं करेगा. उसे दवाई का एक डोज़ मिल चुका है.
दूसरा डोज़ मैं तुम्हें दूंगा. मरने के लिए तैयार हो जाओ!
!!
हा! हा!
हंसते हो?
बोगन! मौत को देखकर मैं कैसे हंस सकता हूं?
तो फिर कौन बदतमीज हंसा?
पीछे देखो.


हा!हा हह्ह!!
तुम डोज़ देने की बात कर रहे थे?
बाप रे! वे बड़े हाथ मुझे पकड़ने आ रहे हैं.
लगता है, अब कभी वह इस ब्लाक में पतंग उड़ाने नहीं आयेगा.
भागो!
साबू! आओ, चलें. तुम्हारी चाची खाने पर हमारा इंतजार कर रही होगी.
© PRAN'S FEATURES

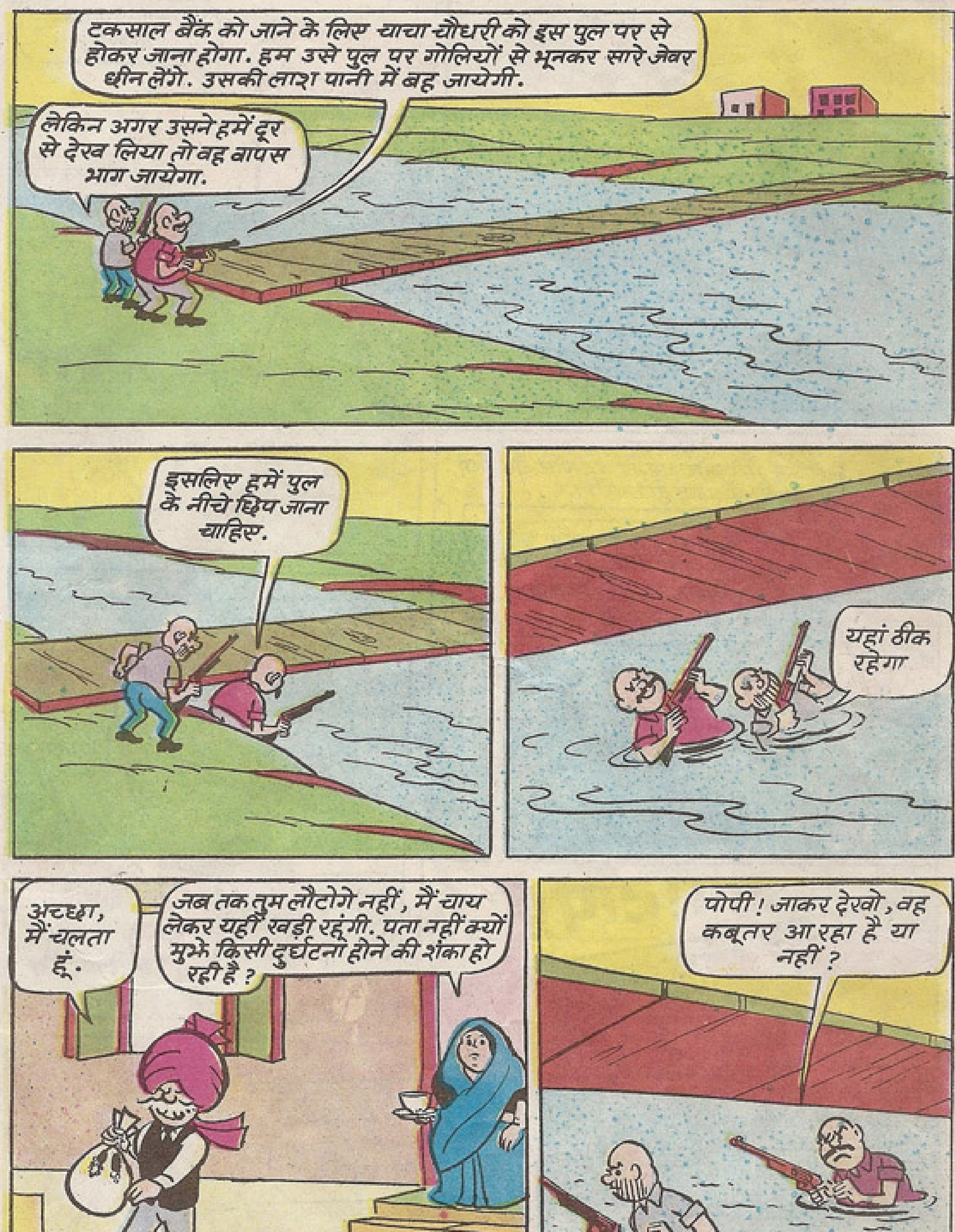

फूल और मजनू
अहा! कितना खूब-सूरत और खुशबूदार फूल उगा है?
अर र र। भागवान! उसे मत तोड़ना!
क्यों? क्या मैं उसे तोड़-कर अपने बालों में नहीं लगा सकती? मैं तुम्हारी पत्नी हूं.
मेरे यहां फूल तोड़ना सख्त मना है. फिर चाहि वह मेरी पत्नी ही क्यों न हो. समझी?
मेरे बाप ने मुझे किस खपती के पल्ले बांध दिया? साड़ी और जेवर तो लाकर देता नहीं, मुफ्त का फूल भी बालों में लगाने नहीं देता.
681.


रीटा! मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूं. कहो तो मैं तुम्हारे लिए आसमान के तारे तोड़कर ला सकता हूं. बस, तुम शादी के लिए 'हां' कह दो.
मजनूं! तारे बहुत दूर हैं.
अगर तुम मुझसे शादी करना चाहते हो तो छत पर रखा हुआ वह फूल ला दो.
बस. रीटा! मैं पूरा बगीचा लाकर तुम्हारे आगे डाल सकता हूं.
बगीचा नहीं. मुझे चाहिए सिर्फ़ छत पर रखा वह फूल!
यह कौन सा मुश्किल काम है? उसे लाकर मैं अभी तुम्हारे बालों में लगा देता हूं.

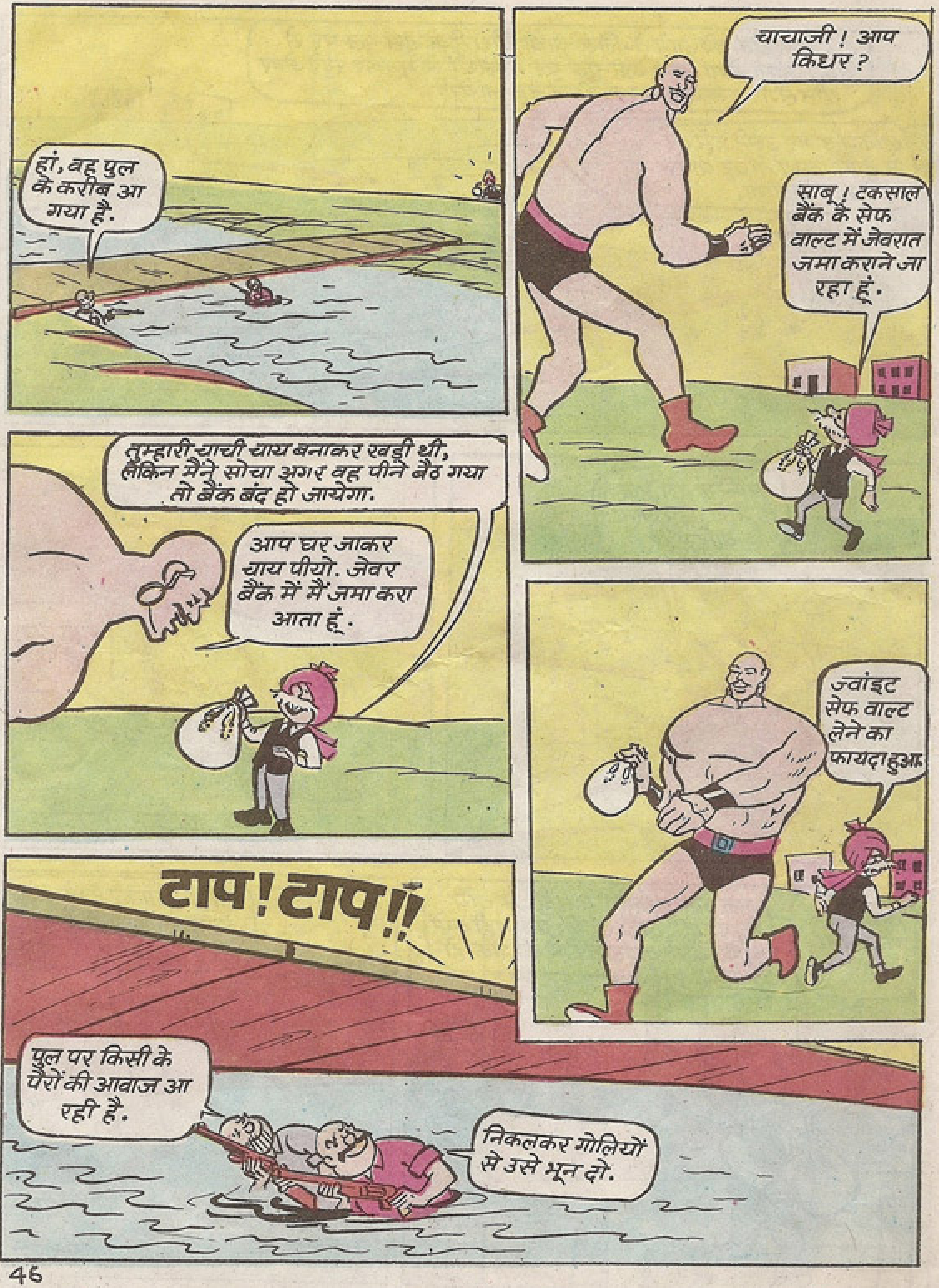

हैं ?? ऊपर कैसे जाऊं ? सीढ़ियों पर तो वह पहलवान बैठा है. फूल तोड़ना उतना आसान नहीं जितना मैं समझता था.
मकान के पीछे जाकर कोशिश करता हूं.
हां ! यह लंगर छत पर फैंककर रस्सी के सहारे ऊपर जाया जा सकता है.
छत तक तो पहुंच गया.

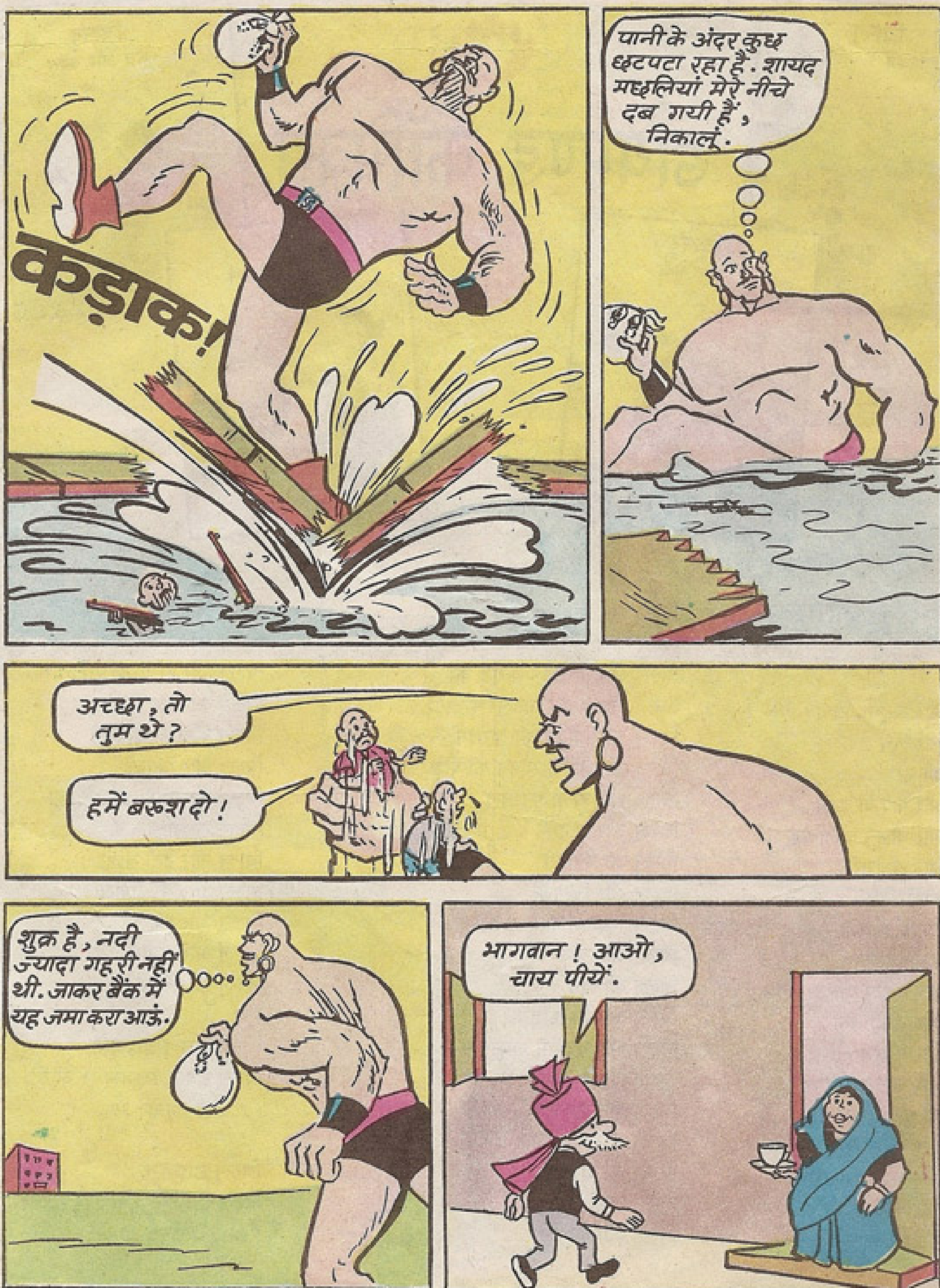

यह फूल अब मेरा है!
इस से पहले कि कोई देख ले, मुझे जल्दी नीचे उतरना चाहिए.
मेरा फूल!
कटट!!
बचाओ!
चोरी करते हो?
मेरी गर्ल फ्रेंड ने शर्त रखी थी कि अगर मैं उसे यह फूल लाकर दूंगा तभी वह मुझसे शादी करेगी.
अगर ऐसी बात है तो जाओ, माफ़ किया.


गूगा का षड्यंत्र
क्या बाहर जा रहे हो ?
हां, भागवान ! ये जेवरात हैं. इन्हें टकसाल बैंक के सेफ वॉल्ट में जमा करा आऊं.
मगर मैंने तुम्हारे लिए चाय बनायी है.
वक्त नहीं है. बैंक के बंद होने से पहले मुझे वहां पहुंचना है.
इसलिए पहले ये कीमती जेवरात जमा करा आऊं, चाय लौटकर पीऊंगा.
इसे लूटने का अच्छा मौका है.
गूगा के पास जाऊं, यह खबर सुनकर वह खुश होगा.
गूगा ! चाचा चौधरी हजारों के जेवरात लेकर टकसाल बैंक में जमा कराने जा रहा है.
पोपी ! उन्हें हम रास्ते में ही जमा कर लेंगे, आओ.
685.
PRAN'S FEATURES



टकसाल बैंक को जाने के लिए चाचा चौधरी को इस पुल पर से होकर जाना होगा. हम उसे पुल पर गोलियों से भूनकर सारे जेवर छीन लेंगे. उसकी लाश पानी में बह जायेगी.
लेकिन अगर उसने हमें दूर से देख लिया तो वह वापस भाग जायेगा.
इसलिए हमें पुल के नीचे छिप जाना चाहिए.
यहां ठीक रहेगा
अच्छा, मैं चलता हूं.
जब तक तुम लौटोगे नहीं, मैं चाय लेकर यहीं खड़ी रहूंगी. पता नहीं क्यों मुझे किसी दुर्घटना होने की शंका हो रही है?
पोपी! जाकर देखो, वह कबूतर आ रहा है या नहीं?


हां, वह पुल के करीब आ गया है.
चाचाजी ! आप किधर ?
साबू ! टकसाल बैंक के सेफ वाल्ट में जेवरात जमा कराने जा रहा हूं.
तुम्हारी चाची चाय बनाकर खड़ी थी, लेकिन मैंने सोचा अगर वह पीने बैठ गया तो बैंक बंद हो जायेगा.
आप घर जाकर चाय पीयो. जेवर बैंक में मैं जमा करा आता हूं.
ज्वांइट सेफ वाल्ट लेने का फायदा हुआ.
टाप! टाप!!
पुल पर किसी के पैरों की आवाज आ रही है.
निकलकर गोलियों से उसे भून दो.


कड़ाक!
पानी के अंदर कुछ छटपटा रहा है. शायद मछलियां मेरे नीचे दब गयी हैं, निकालूं.
अच्छा, तो तुम थे?
हमें बख्श दो!
शुक्र है, नदी ज्यादा गहरी नहीं थी. जाकर बैंक में यह जमा करा आऊं.
भागवान! आओ, चाय पीयें.

डायमण्ड कॉमिक्स



चाचा चौधरी कॉमिक्स

(प्रत्येक मूल्य : रु. 15.00/-)

चाचा चौधरी और ब्रिगेड
चाचा चौधरी-हाकी चैंपियनशिप
चाचा चौधरी और टूथपेस्ट
चाचा चौधरी और जीनियस जान
चाचा चौधरी और छेदीलाल की मूछें
चाचा चौधरी और चतुर चकोरा
चाचा चौधरी की मौसी
चाचा चौधरी-साबू और फुटबॉल
चाचा चौधरी और क्रिस्टल बॉल
चाचा चौधरी-आगरा में
चाचा चौधरी-मिस यूनिवर्स
चाचा चौधरी-ट्रक और चोर
चाचा चौधरी-सोने के सिक्के
चाचा चौधरी-साबू की दाढ़ी
चाचा चौधरी और 440 वोल्ट
चाचा चौधरी और स्पार्टो
चाचा चौधरी और साबू के कारनामे
चाचा चौधरी और पुच्छलतारे
चाचा चौधरी-अण्डे और डण्डे
चाचा चौधरी और पिक्सी
चाचा चौधरी और आग के रहस्य
चाचा चौधरी और बजट का टैक्स
चाचा चौधरी ने
- अंतरिक्ष यात्री के जीवन रक्षा किया
चाचा चौधरी और गुरु बाबा
चाचा चौधरी-अपना मकान बनाओ
चाचा चौधरी और कारबेक का सोना
चाचा चौधरी और चालाक नौकर
चाचा चौधरी और इमपोर्टेड कार
चाचा चौधरी और टम टम
चाचा चौधरी और चेयरमैन
चाचा चौधरी और गुलाम
चाचा चौधरी और
रनगाग के संग मुठभेड़
चाचा चौधरी और कर्जराम की कहानी
चाचा चौधरी और
सिकन्दर के संग मुठभेड़
चाचा चौधरी और स्मगलिंग
चाचा चौधरी और नीला हीरा
चाचा चौधरी और पेड़ के फल
चाचा चौधरी और स्मगलर्स
चाचा चौधरी और मैडम लोरेटा
चाचा चौधरी और रेकार्ड
चाचा चौधरी और क्रिकेट के दुश्मन
चाचा चौधरी और डायनासोर
चाचा चौधरी और खतरनाक नार्वस
चाचा चौधरी और साबू का जन्मदिन
चाचा चौधरी-
सम्राट अशोक का गड़ा धन
चाचा चौधरी और यूरेनियम की चोरी
चाचा चौधरी और पाखण्डी साधु
चाचा चौधरी और इन्टरनेट तस्कर
चाचा चौधरी-
दुनिया के सबसे शक्तिमान व्यक्ति
चाचा चौधरी और बैंक

चाचा चौधरी और किस्सा गधों का
चाचा चौधरी और पेटू बाबा
चाचा चौधरी-मिनिस्टर और बाबू
चाचा चौधरी और रानी का म्यूजिक
चाचा चौधरी और गंगजान
चाचा चौधरी और ऑपरेशन कैपिटल
चाचा चौधरी-
बागीशेर के टकले सर पे
तस्वीर बनाना
चाचा चौधरी-अंतरिक्ष से हमला
चाचा चौधरी और गहने के लालच
चाचा चौधरी और साइबर क्राईम
चाचा चौधरी और मूछवाले दैत्य
चाचा चौधरी और चमत्कारी दवाई
चाचा चौधरी और बिनि के मोटापन
चाचा चौधरी और साबू के पैर
चाचा चौधरी और उस्ताद स्प्रींग जम्प
चाचा चौधरी और राका की कहानी
चाचा चौधरी और हरि छतरी
चाचा चौधरी और ढोंगी बाबा
चाचा चौधरी और जादूगरनी शीबा
चाचा चौधरी और साबू का जन्मदिन
चाचा चौधरी और
साउथ ब्लॉक पर हमला
चाचा चौधरी और राका की तानाशाही
चाचा चौधरी और साबू की ताकत
चाचा चौधरी और कांगो
चाचा चौधरी और जेबकतरी
चाचा चौधरी और विदेशी एजेंट
चाचा चौधरी और गुलामों की बिक्री
चाचा चौधरी और चाइल्ड स्टार बॉबी
चाचा चौधरी और राका का जवाब
चाचा चौधरी और बैट्समैन पलटन
चाचा चौधरी और स्काई डाईवर्स
चाचा चौधरी और राजकुमारी अन्ना
चाचा चौधरी और आज का रॉबिनहुड
चाचा चौधरी और हाईजैकर
चाचा चौधरी और हिममानव
चाचा चौधरी और तिरंगा
चाचा चौधरी और इम्पोर्टेड कार
चाचा चौधरी और सोने की ईंट
चाचा चौधरी और चमत्कारी इत्र
चाचा चौधरी और चमत्कारी मुर्गी
चाचा चौधरी और राका की तबाही
चाचा चौधरी-टोकियो में
चाचा चौधरी और देहरादून एक्सप्रेस
चाचा चौधरी और वर्ल्ड कप
चाचा चौधरी और राका का खेल
चाचा चौधरी और राका का हमला
चाचा चौधरी और राका का इंतकाम
चाचा चौधरी और राका की वापसी
चाचा चौधरी और राका से मुठभेड़
चाचा चौधरी और राका का तूफान
चाचा चौधरी और राका का चैलेंज
चाचा चौधरी और राका

चाचा चौधरी और रैम्बो
चाचा चौधरी और जिद्दी कजान
चाचा चौधरी और जहरीला इंसान नोरा
चाचा चौधरी और विचित्र चिड़ियाघर
चाचा चौधरी और ट्रिपल नाइन
चाचा चौधरी और प्रो. शटलकाक
चाचा चौधरी-जुपिटर पर
चाचा चौधरी और बनारसी ठग
चाचा चौधरी और चोर की तलाश
चाचा चौधरी और शेख इब्नबतूता
चाचा चौधरी और एक करोड़ का हीरा
चाचा चौधरी-सम्राट अशोक का खजाना
चाचा चौधरी और
अरमान अली-फरमान अली
चाचा चौधरी और हाईवे के लुटेरे
चाचा चौधरी का इंसाफ
चाचा चौधरी और रोबोट
चाचा चौधरी और हीरों की खेती
चाचा चौधरी और साबू पर हमला
चाचा चौधरी और चंपत-संपत
चाचा चौधरी और हकीम जमालगोटा
चाचा चौधरी और पलीते की कमर
चाचा चौधरी और पोपटलाल
चाचा चौधरी और उड़ने वाली कार
चाचा चौधरी-बिल्लू और पिंकी
चाचा चौधरी का धमाका
चाचा चौधरी और साबू की शादी
चाचा चौधरी-अमेरिका में
चाचा चौधरी और साबू का बूट
चाचा चौधरी और क्रिकेट मैच
चाचा चौधरी और रहस्यमय चोर
चाचा चौधरी और साबू काले टापू पर
चाचा चौधरी और कराटे सम्राट
चाचा चौधरी और बैंक के लुटेरे
चाचा चौधरी और बोतल का जिन्न
चाचा चौधरी और गब्बर सिंह से टक्कर
चाचा चौधरी और अकबरी खजाना
चाचा चौधरी और साबू का अपहरण
चाचा चौधरी-अंतरिक्ष में
चाचा चौधरी और आदमखोर
चाचा चौधरी और साबू का हथौड़ा
चाचा चौधरी और शिकारी लकड़बग्गा सिंह
चाचा चौधरी और मैडम जोरो
चाचा चौधरी और युधिष्ठिर का मुकुट
चाचा चौधरी और हाथी का व्यापार
चाचा चौधरी और सड़क का भूत
चाचा चौधरी और चालाक गंजा
चाचा चौधरी और साबू का वतन
चाचा चौधरी और गाजा
चाचा चौधरी और फिल्म स्टार
चाचा चौधरी और बिग बेन
चाचा चौधरी और स्काटलैंड यार्ड
चाचा चौधरी-बंदरों के देश में
चाचा चौधरी और अफलातून
चाचा चौधरी और पॉप शो

अपने निकट के बुक-स्टॉल से खरीदें या हमें लिखें

हमारा पता : डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि., 257, दरीबा कलां, दिल्ली-110006, ई-मेल: info@diamondcomic.com

डायमण्ड कॉमिक्स









पिंकी कॉमिक्स

(प्रत्येक मूल्य : रु. 15.00/-)

पिंकी और दारा
पिंकी और झपटजी का कुर्ता
पिंकी और चटपटी चाट
पिंकी और कुरकुरे चिप्स
पिंकी और टोकन टोपी वाला
पिंकी की घड़ी
पिंकी और ट्रैफिक कंट्रोल
पिंकी और कुटकुट की आइस्क्रीम
पिंकी की पैंसिल
पिंकी का झूला
पिंकी की कार
पिंकी और कुटकुट की करामात
पिंकी और आतिशबाजी
पिंकी और दीदी का फोटो
पिंकी और झपट जी का जन्मदिन
पिंकी का जार
पिंकी का कम्प्यूटर गेम
पिंकी और स्पोर्ट्स कैप
पिंकी का चॉकलेट
पिंकी और टेलीफोन
पिंकी और कलंदर
पिंकी और चश्मा
पिंकी और मिस वर्ल्ड
पिंकी का बगीचा
पिंकी और मिसेज चमचम
पिंकी और अंकल जी
पिंकी के जूते
पिंकी और रुस्तम
पिंकी और विश्व रिकार्ड
पिंकी का जन्मदिन
पिंकी और चाचा सुलेमानी
पिंकी और कुंदनलाल पगड़ीवाला
पिंकी के मम्मी-पापा
पिंकी और जोकर
पिंकी और चैरिटी का टिकट
पिंकी की पूसी
पिंकी और दादा जी का अखबार
पिंकी का पिल्ला
पिंकी और नानी की कहानी
पिंकी और हातिमताई
पिंकी और रंगीन कैमरा
पिंकी और साबुन के बुलबुले
पिंकी और मल्लिका का खिताब
पिंकी और मियां चिल्गोजा
पिंकी और झपट जी की पतंग
पिंकी और बंगाली रसगुल्ले
पिंकी और मुफ्त के बेर
पिंकी और छूमन्तर
पिंकी और टू-इन्-वन
पिंकी की गुड़िया
पिंकी और मिट्ठू
पिंकी और कुटकुट गिलहरी
पिंकी का नया फ्रॉक
पिंकी और तितली
पिंकी-चाकलेट्स टॉफियां
पिंकी की पिकनिक
पिंकी और स्कूल की घंटी
पिंकी की आईसक्रीम
पिंकी की नाव

पिंकी डबल डाइजेस्ट
पिंकी डबल डाइजेस्ट-1 और 2
(200 पृ.) मूल्य: 30/-

पिंकी डाइजेस्ट
पिंकी डाइजेस्ट 1 से 22
(96 पृ.) मूल्य: 30/-

अपने निकट के बुक-स्टॉल से खरीदें या हमें लिखें

हमारा पता : डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि., 257, दरीबा कलां, दिल्ली-110006, ई-मेल: info@diamondcomic.com

Diamond Comics Hindi-------------A. H. W. -------------Paltu Series---------R.N.I. N0. 39423/81

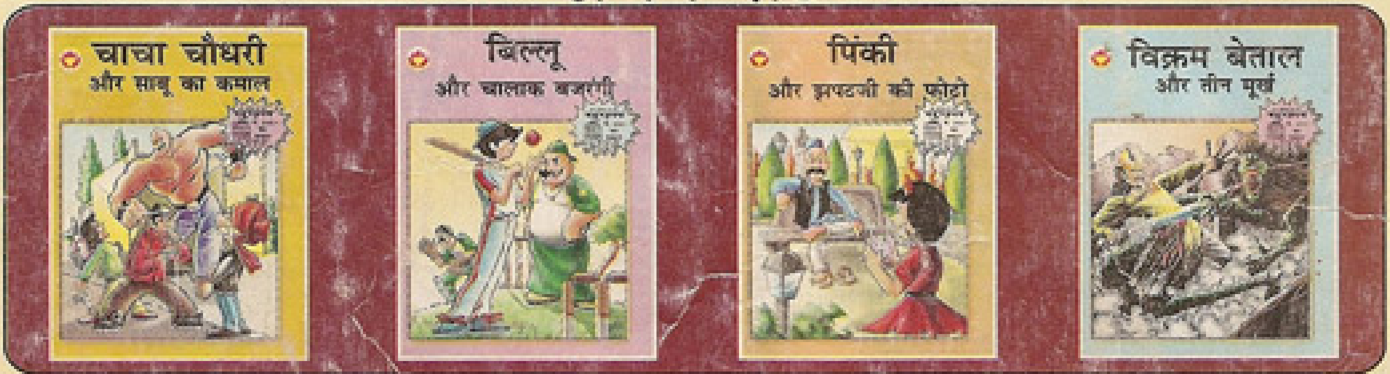
डायमण्ड कॉमिक्स का उपहार

रु. 100/- के गिफ्ट पैक के साथ पाएं

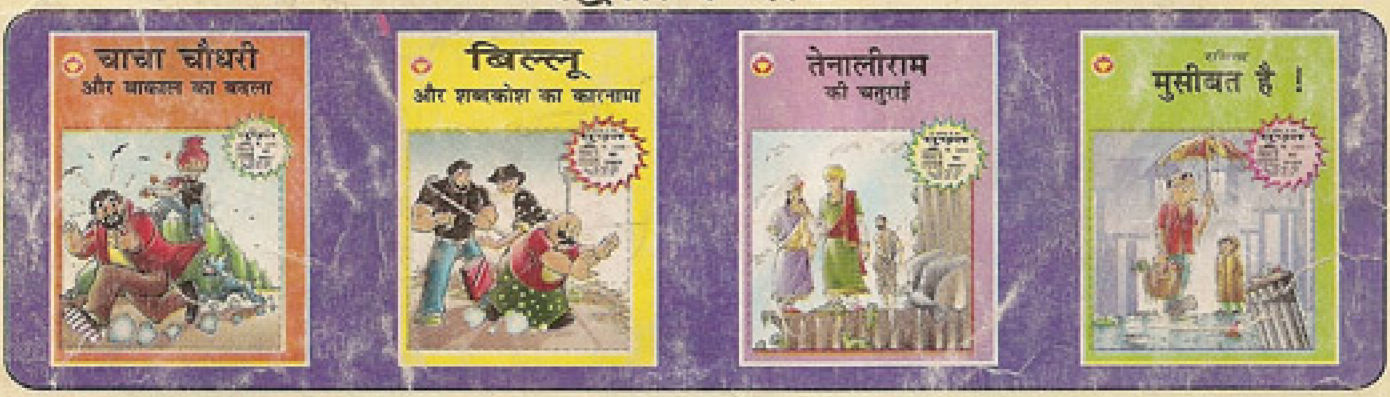
रु. 200/- का मुफ़्त उपहार

अर्थात रु. 100/- में पाएं रु. 300/- का मज़ा

प्रथम सैट



द्वितीय सैट



तृतीय सैट



100/- में खरीदें कोई भी चार कॉमिक्स का एक सैट और पाएं रु. 200/- का अतिरिक्त उपहार मुफ़्त...बिल्कुल मुफ़्त !